discuss this matter. In fact, if we take the total number of hours spent on this question, the government cannot be accused, the ruling party cannot be accused, of trying to avoid it.

In regard to increased dearness allowance, the Pay Commission is considering the whole question and it is trying its level best to submit an early report.

SHRIS. M. BANERJEE : Sir, this has nothing to do with Pay Commission. This is a separate issue.

13,00 hrs.
SHRI KARTIK : ORAON (Lohardaga) : I want to ask one thing. Perhaps you are aware, Sir, the iScheduled Castes and Scheduled Tribes Amendment, Bill was postponed after the general discussion which is unprecedented in the history of 'the Lok Sabha. That is a Bill which affects millions of scheduled castes and scheduled tribes in India who have been denied the opportunity of privileges for them. Shri Hanumanthaiya who was then the Minister of Law and Social Welfare assured the House that it will be brought in the same very Session. ENow, it has not been done. Will the Minister give ai hint when will it be brought?

SHRI RAJ BAHADUR : I shall make renquiries from my colleague, the Minister concerned, and then inform the House.

CENTRAL SALES TAX (AMENDMENT) BILL*

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI K. R. GANESH) : I beg to move for leave to introduce a Bill further to amend the Central Sales Tax Act, 1956.

MR. SPEAKER : The question is :
"That leave be granted to introduce a Bill further to amend the Central Sales Tax Act, 1956."

The motion was adopted.
SHRI K. R. GANESH: Sir, I intro* ducet the Bill.
13.02 hrs.

STATUTORY RESOLUTION RE : PROCLAMATION IN RELATION TO THE . STATE. OF: PUNJAB ; AND P PUNJAB

STATE LEGISLATURE (DELEGA--TION OF "POWERS) BILLContd.

MR. SPEAKER : ${ }^{\text {The }}{ }^{\text {House will now }}$ proceed ..with the further discussion of the Statutory Resolution Re : Proclamation t by the President in relation to Punjab and Punjab : State Legislature : (Delegation of Powers) Bill. Shri Darbara Singh.
(\%ी१ ः बरबारा संसह (होशियार पुर) : श्रहथक्ष : महोदय, मैं अर्ज कर र्रा था कि बहुत प्रच्छा हुप्राः कि यह सस्कार चली गईं जो अकालियों की शी।। व़हाकरट्इान दूसरी सारी चीजों से भरी पड़ी थी। ज्भैने एक उदाहाराए दिया था कि उनकी वाकफियत किस इन्तहा तक चली गई है. । दो एम० ए 0 पास लोगों ने दस्वर्वस्त दी नोकरीं के लिए। उनमें सेः एक एम० ए० फस्ट क्नास था "श्रोर एक एम० ए० थर्ड क्लन था एम० ए० फ्रस्ट क्लास के लिए सरकार यह कहने लगी कि श्राप के साथ तो सिर्फ' एक ही लिखा हुआ है, हम तो तीन वांले को लेंगे । यह रिकार्ड पर है कि थर्ड कलास वाले को लिया लेकिन फर्स्ट क्लास वाले को नहीं लिया क्योंकि उसके साथ एक ही लिखा हुआ था । मैं 'बतलाना चाहता हूं कि यह तो उनकी वाकफियत की इन्तहा । मैं इसके बारे में उसको दोहराना नहीं चाहता जो में पहले ही कह चुका हूं ।
13.03 hrs .
[Mr. Deputy ${ }^{\text {Speaker }}$ in the Chair]
इसके बाद श्राप देखिये कि इवैक्वी प्रापर्टी का क्या हाल किया है । डेढ़ करोड़ रुपया खर्च करके पतलज रिवर के दोनों तरफ बांध लगाये गये । बांध लगा कर उसमें करीब एक लाख
*Published in Gazette of India Extra-ordinary, Rart II, section 2, dated 5-8-71.
$\dagger$ Introduced with the recommendation of the President.
[श्री दरबारा सिह]
एकड़ जमीन निकली। उस जमीन के बारे में फैसला यह हुग्रा था कि यह जमीन हरिजनों को, चाहे हरिजनों की कोग्रापरेटिव सोसायटी हो या हरिजन लेडलेस कल्टिवेटर हों, पहले दी जायेगी। हरिजनों को प्रिफरेंस दिया जायेगा। उनके ग्रलावा जो लैंडलेस कल्टिवेटर होंगे उन की बारी बाद में आगयेगी। नतीजा यह हुग्रा कि जब यह लोग सरकार पर काबिज हुये तो वह सारी ज़मीन उन लोगों में तकसीम करना उन्होंने शुरू किया, इस नाम पर कि यह जमीन सरकार की है ग्रौर सरकार उन ग्रादमियों में बांटेगी जिनको वह चाहती है। जो लोग कई साल से, जब बांध बना भी नहीं था, कोग्रापरेटिव सोसायटी ज चलाते थे, सालहा साल मेहनत करके श्रपनी रोटी निकालते थे, उनको उठा कर किन को जमीन देना शुरू किया ? जिन लोगों ने बहुत दिनों पहले क्लेम दिया हुआ था उनको वहाँ डाल कर जहां वह बंठे हुए थे, हरिजनों को निकालने की पूरी कोशिशा की गई, श्रोर यह भी इस लिहाज से किया कि जो हरिजन हैं वह कांग्रेस को वोट देते है, श्रकालियों को वोट नहीं देते । ग्रकालियों के भ्रलावा भी तो सिख हैं, ग्रकालियों का तो अकेला वह सेक्शान है जो नीली पगड़ियाँ बांघता है। वह लोग इस कदर फिर्केदारी की इन्तहा में पहुँचे हुए हैं कि जो सिख नीली पगड़ी नहीं बाँवता उसको वह सिख तसलीम करने के लिये भी तैयार नहीं हैं। इन वेचारे हरिजनों की कौन बात करे ? हरिजनों को कोई पूछने वाला नहीं है।

इवँक्वी लैंड जो हिन्द सरकार ने उस गवर्नमेंट को पास श्रान की, उसके बारे में यह फैसला किया गया था कि वह सस्ते दामों पर दी जायिगी। वह सारी जमीन पंजाब सरकार के पास है । उसकी जो बांट की गई है, प्रगर उसकी छान बीन की जाये तो पता चलेगा कि किन लोगों के पास वह जमीन गई है। जितने मिनिस्टर हैं उन सब की कतार बना कर क्राप देग्विये तो पता चलेगा कि सतलज के किनारे

कितने सैकड़े एकड़ जमीन है ग्रौर किस तरह से उन्होंने उस पर कब्जा किया हुग्रा है। उन्होंने वह जमीन सरकार की भी नहीं समभी, ग्रपनी समभी, और सारी जमीन को श्रपने रिशतेदारों में बांट दिया। वहां पर एक सरदार थे, में उन का नाम नहीं लेना चाहता क्योंकि वह यहां पर हाजिए नहीं हैं। वह वहां पर रेवेन्यू मिनिस्टर थे, वहग्रक्सर लोगों से कहते थे कि ग्रापके दाढ़ी नहीं है, जब तक यह नहीं लाते, तब तक श्रापका काम नहीं हो सकता। यह रेकार्ड पर है । इस तरह से वहां डिस्क्रिमिनेशान किया जाता था कि हिन्दू ग्रोर सिख की तमीज की जाती थी मरकारी तोर पर बंठ कर। सरकारी तौर पर एक मिनिस्टर को, जो सिख है क्या ग्रधिकार है कि वह जा कर यह कहे कि तुम सिख नहीं हो इस लिए तुम्हारा काम नहीं करना है। वहां पर इस तरह की बातें हो रही थीं। जितनी जल्दी चली गई यद् सरकार वह उतना ही अच्छा हुग्रा है।

इसके श्रलावा जो 30 एकड़ से जो सर्प्लस जमीन निकली है उसकी बांट को देखिये कि कहां हुई है ग्रौर कहां हुई ही नहीं। मुभे पहले इस बात का पता नहीं था। मुभे खुईी है इस बात की कि एक्स चीफ मिनिस्टर प्रकाश सिंह बादल ने स्टेटमेंट दिया है कि उनकी एन्क्वायरी हो, वह उसके लिये तैयार हैं। में उपाध्यक्ष महोदय, आपकी मार्फत सरकार से ग्रर्ज करना चाहता हूं कि जब इस चीज के लिये श्री प्रकाश सि बादल तैयार हैं तो वह जरूर की जाय। जब सरदार प्रताप संह कैरो ने कहा कि मेरे खिलाफ एन्क्वायरी हो प्रोर उनके मामले की एन्क्वायरी की गई। उसी तरह से ग्राज सरदार बादल के खिलाफ भी एन्क्व।यरी होनी चाहिए। खुद उन्होंने इस की माँग की है। तब पता चल जायेगा कि कितनी जमीन कसे ली ग्रीर किन माइनर्स के नाम में ली ।

श्रगर श्राप एक बार वहां जा कर देंखे तो वही हाल हरिगेशान का भी है। वहां एक बड़ी

नहर राजस्थान को जाती है, दूसरी नहर भी जाती है। किसी को भी इजाजत नहीं है कि नाली लगा ले और ग्रपने खेत में पानी ले ले । लेकिन उनके खेतों में इल्लीगल तौर पर सारे का सारा पानी बह रहा है । ग्राज गार्डन कालोनी के नाम पर फार्म के नाम पर पांचगुना पानी ले कर छोटे-छोटे किसानों कोजो पानी मिलना चाहिए, उसकी कीमत उनसे वसूल की जा रही है। ग्राप अभी जा कर देख लें, ग्रभी तक वह वहां से नहीं उठी होगी । ग्रौर ग्रगर वहां से नालियां उठा भी ली गई होंगी तो उनका निशान वएकी होगा। ग्राप इसकी एन्ववायरी कर के देख लें ।

इस के ग्रलावा इंडस्ट्रीज का क्या हान हुआ है ? इंडस्ट्रीज मिनिस्टर के खिलाफ इल्जाम लगाये गए हैं कि कैसे पास ग्रान होते रहे हैं पैसे एलेक्रान लड़ने के लिए। वेशाक उन्होंने अ न्तपुर का एलेक्रान लड़ा हो, सारे के सारे पारिलयामेंट्री एलेकशान में, 13 सीटों में से उन को एक सीट मिली है, लेकिन इंडस्ट्रीज से पैसा लेकर सारा पंसा खर्च किया गया। जो भी कोटे दिये गये हैं, स्टेनलेस स्टील के कोटे और दूसरे कोटे दिये गये हैं उनकी एन्क्वायरी की जाए तो श्राप को पता लगेगा कि उन लोगों को कोटे दिए गए हैं जिन्होंने न तो खुद अ्रौर न उनके बाप दादों ने कभी कोई काम किया है। यह जितनी बातें होती हैं, श्रगर उनमें से एकएक का मैं जिक्र करू तो बड़ा टाइम लगेगा और में ग्राप का ज्यादा वक्त नहीं लेना चाहता। लेकिन मैं अर्ज करना चाहता हूं कि इन चीजों की एन्ववायरी जरूर होनी चाहिए।

श्रब में ग्रापको ऐग्रो इंडस्ट्रियल कारपोरेशन की बात बतलाता हूं। एक बहुत बड़े वहां के मिनिस्टर थे जिन्होंने कभी खुद ऐग्रीकल्चर नहीं करवाया वह मुजार्रो से खेती करवाते खदे हैं अ्रोर मुजारों से करवा कर श्रपना पेट पालते र्हे हैं । खैर, पेट पालने की बात तो नहीं क्योंकि पेट उनका बहुत बड़ा है, लेकिन ज्यादा

पैसा जो लेते रहे हैं वह उसके चेयरममन हैं। उस कारपोरेशन के चेयरमैन हैं जो गरीब किसानों के लिए हैं, जिन्होंने कभी जो जी०डी०ग्रार० का ट्रैक्टर है उसको चलाया नहीं है, उसको खेत में ले नहीं जा सके हैं । हिन्द्ध सरकार इस के लिए तैयार है कि वह श्रपना शेग्रर दे । जब उनसे कहा जाता है कि ग्राप श्रपना शेग्रर क्यों नहीं देते तो कहते हैं कि हमारे पास पैसा नहीं है। सरकार दिवालिया हो गई । वह चाहते हैं कि श्राज लोग मरें। यहाँ भूख हड़ताल की गई । लोगों ने बड़ी ग्राहो पुकार की, लेकिन उनकी कोई सुनवाई नहीं हुई। मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि ग्रब तो दोनों तरफ श्राप की ही सरकार है। इसका फैसलं कीजिए ग्रौर यह फैसला जितनी जल्दी हो सके उतनी ही श्रच्छी बात है ।

शैड्यूल्ड कास्ट्स के बारे में भी में कुछ कहना चाहता हूं। लेकिन उससे पहले में एक ग्रौर बात कहना चाहता हूं । वहाँ पचास लाख रुपया रखा हुआ था इस बात के लिए कि धमं भाला बनानी है। उन लोगों के लिए जो गरीब हैं, जिन के पास कोई गुंजाइश नहीं है कि जब शादी बयाह के मौके पर बारात 尹्याए तो उसको ठहरा सकें। बहुत ग्रच्छी बात थी। लेकिन में चाहता हूं कि ग्राप जा कर देंखे श्रौर इनकवायरी करा कर देंखे कि क्या वही धर्म शाला बनी है। वहाँ घर्म तो है ही नहीं बाकी चीज हो या न हो इसका पता नहीं...

## एक माननीय सदस्य : शाला है ?

शी दरबारा सिस : शाला है या नहीं इस का पता नहीं लेकिन धर्म वहां कहीं नहीं है। जहां तक शैड्यूल्ड कास्ट्स का सम्बन्ध है मैं पन्त जी को कहना चाहता हूं कि जितनी रियायतें उनको दी गई हैं उनके बारे में सभी एम०एल०एज० जो पिछली श्रसैम्बली में थे उन्होंने एक मेमोरेंडम दिया था कि उनको जो मुराश्रात काँप्रेस के राज में मिलती थी, जितनी रियायतें दी गई हैं, जितनी फैसिलिट़ीज दी गई
[भी़ी दरदारा fिंह]

हैं उन सब को श्रकालियों ने वापिस ले लिया:है श्रोर इसकी ग्राप जाँच करा कर देख लें कि कितनी इसमें सच्चाई है ग्रौर कितनी नहीं है। मैं जानना चाहता हूं कि क्या ग्राप यह इनकवायरी भी कराने के लिए तैसार हैं. या नहीं हैं। जो दलित हैं, जो पिछड़े. हुए हैं, जिन पर गुर्रबत तारी है, उनको जो फैसिलिटीज मिली हुई थीं क्या वे वापस ली गई या नहीं इसकी इनक्वायरी होना निहायत जरूरी है।

सन्त फतह सिंह्र 101 का जत्था लेकर दिल्ली ग्रा रहे हैं ग्रोर इसकी बहुत चर्षा चल रही है। किस बात के लिए वे श्रा रहे हैं ? वे. कहते हैं कि. दिल्ली के गुर्दारों को हमने आजाद करवाना है। में. जानना चाहता हूं कि दिल्ली में कोन सी सरकार बैठी है ? वाजपेयी जी चले गए हैं। उनको में आज बहुत ज्यादा दिलचस्पी की बातें बता देता ग्रगर वह यहां होते। श्रब में उसमें नहीं जाता हूं । लेकिन मैं कहना चाहता हुं कि जिन श्रादमियों की सरकार ने यहां कमेटी बनाई हैं, जो सरदार उस कमेटी में हैं, जो सिख उस कमेटी में हैं वे वही हैं जिन्होंने बिल्ली को बनाने में पिछ्घले पचास साल में श्रपना पूरा हिस्सा दिया है श्रोर वे दिल व जान से इनके प्रबन्ध को ठीक करना चाहते हैं। कोई. यह नहीं कहता है कि इलैकरान नहीं. होंगे 1 लेकिन सन्त्त फतह fिंह 101 का जत्था लेकर वहां से चले हैं । म्र习习 तक वह जत्था कहाँ पहुँचा है इस का पता नहीं है। पहले उन्होंने दो तीन बार गुरु की सोगन्व खाई है। हिप्टी। स्पीकर साहव जिस को हम सब से ग्रफजल मानते हैं वह भ्रकाल तस्त है। उससे ग्रफजल हमारें लिए प्रोर कोई स्थान नहीं है। उस तरून पर खड़े हो कर उन्होंने सोगन्ध खाई है कि मैं जान दे दूंगा श्रगर यह बात न हुई । तींन बार उन्होंने सोगग्प खाई है प्रौंर तीन बार उसको तोड़ा है। भ्र वह 101 का जत्था ला रहे हैं। अब वे राजस्थान घले जायेंगे या किस तरफ चले जायंगे
एयका णना नहीं ते । पता नहीं क्या कग गे

हैं। अ्यभी तो थोड़ा सा दौरा पड़ना शुरू हुग्रा है द्रिल का । ग्रभी: ओर पड़ेगा क्योंकि लोग उनके साथ नहीं हैं। पुलिस या एडमिनिस्ट्र्श्रन जिस-एहतियात से काम कर रही है उसकी में तारीफ करता हूं। उसने उ पर भ्रटंदु नहीं होना दिया। वर्नां जितनी ते जी से लोग उनकी तरफ जाते हैं, उसमें पता नहीं क्या हो पाता। जिसके पाँवों;को लोग हाथ लगाते थें, उसके सिर को ग्राज वही लोग पकड़ना चाहते हैं। उनका कोई इकोनोमिक प्रोग्राम नहीं है। ग्रापने जो कुछ किया है वह न सिखों के हक में हैं भ्रौर न पंजाब के हक में, है। पंजाब वाले। रोते है। कोई भी ग्रकाली मुमे अ्राकर यह नहीं बता सका कि तकसीम से कोई फायदा हुग्रा है। हरियाया वाले कह सकते हैं कि हम को लाभ हुग्रा है। चीफ मिनिस्टर वहां बन गया, fिनिस्टर बन गए, ग्रपोजीशन में लोग ग्रा गए। जो घर बंठे थे वे भी निकल कर बाहर अा गए । सब चीज.हुई : लेकिन पंजाब वाला कैसे कह सकता हैं कि वह तक्सीम उसके हक्र में हुई हैं। मेंरा गला काटने के निए वहां कोशिरों की गई.हैं इस वास्ते क्योंकि मैं इस तकसीम के खिलाफ था ग्रोर कहा करता था कि यह् नहीं होनी चाहिए। लेकिन तकसीम के बाद जो हालात पैदा हुए हैं उन हालात के नतीजों के तोर पर ये चीजें हो रही हैं । सन्त फतह सिह जत्था लेकर श्रा रहे हैं। क्या कह रहे हैं ? भ्रब उन्होंने फाजिल्का की बात करनी शुरू कर दी है। अपने हाथों से दिया और श्रब उसकी बात करती गुरू कर दी है। खुद कहा कि चंडीगढ़ दे दो श्रोर फानिल्का तो लो ग्रोर श्राज किर उन्हृंने फाजिल्का की वात करनी गुरू कर दी है। जब सरदार गुरनाम सिह नें श्रमृमतर में अ्यकाल तस्त में बैंे हुए सन्त फतह सिंह को कहा कि सन्त जी भ्रब तक जैसी बात हुई है उससे लगता हैं कि फाजिल्का हमें देना पड़ेगा तब हमें चंडीगढ़ मिलता है, तब उन्होने कहा fि उाने नो चंडींगत लो यह मेगी जान खसाओ

उनकी जान तो हूट गई । अब फिर उन्होंने फाजिलका की बात करनी गुरू कर दी है। कुछ कांपेसे वाले भी करते हैं। मैं नहीं मानता हूं। जो हिन्द सरकार ने फैसला किया हूं, उसको मजबूती से :मको लागू करना चाहिए। में इसी हक में हैं। ग्रगर ग्राप का एक फैसला लाग्र नहीं होगा तो कल को हूसरा भी नहीं हो सकेगा फिर तीसरा नहीं होग।। अ्याबिर कहीं फेसलों की संकेटटी तो होनी चाहिए। ग्रब सन्त जो कहते हैं कि हमें फाजिल्का जहर fिलना चाहिए। जिसको ग्र ने हाय से दे दिया उसको कहते हैं कि मिलना चाहिए। ग्रव चंडीगढ़ की इंटों, दीवारों और प₹्यरों को लेकर चाटते रहो। उस में क्या रबा है। फानिज्का की जमीन बड़ी फरााइल हैं, बड़ी सरजमीन है। वहां बहुत श्यच्छी किस्म का रेशा पैदा होता है, काटन पैंदा होती है । सबते ज्यादा काटन वहाँ होती है। सेक़ुों मुरण्वा मील जमीन दे दी गई है । वापिस सेने की जन बह बात करते हैं तो वह आपृश थाट है। इसको कौन मानेगा।

उनका जल्था यहां ग्रा रता है, किस बात के लिए ? किस गुद्धारे के लिए ? उस गुद्धारे के लिए जिसका फैसला सरकार ने नहीं चकिक हाई कोटे ने किया, हाई कोटे की जजमेंट में हुम्रा। उसी जजमेंट के मुनाबिक एक कमेटी बनाई गई है। उस कमेग़ी ने क्या काम किया है, यह में श्रापको वताना चाहता है। 20 मई 1971 से 24 नुलाई 1971 तरक किनना पैसा उसके पास ग्राया है ? पररई कहीं शामिन कर लिए हों तो उस सदको निकाल कर इस ग्रसें में उसको जो इनकम हुई है वह दस लाख से ज्यादा की हो चुकी है। यह इनकम 65 दिनों के दौरान में हुई है। अघ श्राप सारा निकाडं इस गुद्वारे का-पीछे का देसे तो एक जो सरदारें अजम के नाम से भरहार थे, ध्री संतोल संसह, वह
 करते थे । जो ग्रामदनी भैंने 65 दित की बताई है इसके पुकाबले में कितनी ज्याता है, इसको आाप देब सकते हैं। साल गुजरने में तो झ्रभी

वहुत ग्रसा पड़ा हुम्रा है। एजीटेश्रन करके म्रौर गड़बड़ पेषा कर इन गुद्धारों को वे इसलिए ले लेना चाहते हैं ताकि यह पता न चल सके कि एक साल के श्रन्दर इनसे कितनी श्रामदनी होती है । इसका रिएकशान पंजाब में हो रहा है। पजाब के लोग कहने लग गए हैं कि अ्रगर दिल्ली के दस बीस गुन्दारों की मह हालत हुई है तो पंजाव में जो सेकड़ों गुरदारें हैं और जिन पर ग्रकालियों का कजजा है, उनकी कंसी हालत हो रही होगी। एक क्लकं को पकड़ा गया है जिसने नो सी रчवा चोरी किया था। पता
 पकडे जायेगे, किस-किस्स के घर में पक़े जाएंगे। गुछादारों की एक परमभरा है। एक भैसा भी इनका अगर कोई ख़ा लेता है तो वह उसको हज्म नहीं हो सकान है और इसके लिए उसको जान देनी पड़़गी भ्रीर दस वार पंदा होना पड़ेगा वाधिस ग्रदा करने के लिए। अगर ऐसी वात है तो किर यह लालों रुपा हज्म करने वाले जो लोग हैं इनको हाटा दिया गया है तो चीख कहां से निकतती है इसको श्राप देनें। पक्त़ा किरी को जाता है श्रोर ददं किसी习्रोर को होता है। पजाव में इसका ददे महेसूस किया जा रहा है। में कहंगा कि इन गुरुद्वारों की हालत दुरस्त करने के लिए बराबर कोशिश होनी चाहिये।

भैं जानता हैं कि कौन इनेे हमदर्व लोग हैं। जन संघ के भाइयों को मैं कहना चाहता हें कि गुन करो कि गुछ्दारों के बराबर श्रापके मंदिर नहीं हैं ग्रौर ग्रार होते ग्रौर उनकी भी ऐसी एगोसिएग्रान बना दी जाती तो उसका भी वही़ हाल होता।

पंजाब के हानात से श्राप मुसलसिल तोर पर वाकिफ, रहे हैं। ग्राप वहां के हालात जानते हैं । श्राप सब बातों की इन्व्वायरी करें। एक्स चीफ किनिसटर कहते हैं कि मैं इनव्वायरी के तैंयार हूं । जब इनव्वायरी नहीं होती हैं तो इस का मतलब वह है कि सरकार इसके निये तैप'र नहीं हैं। दमारी भी तैयारी होनी चादिये।
[श्री दरबारा सिह]
इन्बवागरी कमिशन मे ही ये सब घीजें सामने भ्रा सकती हैं। श्रगर आप यह नहीं करते हैं तो कम से कम एक श्रादमी को बिठा बें श्रोर श्राप को पता चल जाएगा कि किस तरह से भाइयों के नाम, बछच्चों के नाम, माइनर्ज के नाम, पैदा होने वाञे बच्चों के नाम तथा दूसरों के नाम जमीनें की गई हैं। 32 हजार एकड़ जमीन में से तीस एकड़ छोड़ कर बाकी ध्राप भूमिहीनों में तकसीम कर दें, यही भ्रन्त में मेरी श्राप से प्रार्थना हैं।

हन शब्दों के साथ मै जो प्रोक्लेमेशन है इसको पूरे तोर पर तसलीम करता हूं ।

श्री तेजा निस्ह ₹वतंत्र (संगरुर) : बहित से भाइयों ने कुरप्शान वगंरह के बारे में कह् दिया है । हमारी पार्टी ने इस हवूमत के गिरने श्रोर गिर कर गवर्नर ने जो एकड़न लिया fि झ्रमेम्बली के एबालिश कर दिया उसकी निमा न की है। ऐसा करके उन्द्रोंने डिफैकरांज वर्ग्र को ह्रमेशा के लिगे तो नही लेविन वम मे कम अगले धुनाब तक रोक दिया। यह वड़ी चह्दी बात है। हमने इसको बैलकम $f$ या धा जो
 जरिये एक कंसलेटटिव कमेटः बनाई जा रही है, हसको भी नम वैनकम करते हैं। ह़सको जल्दी मे जल्दी ग्रमल में लाया जाना चादिये । इम कमेटी को परी नरह फंकरान करना चाहिये। इसका पजंडा पूरी तर पंजाब का जो मंक्रेरिण्ट है उसषी मदढ से तैयार करवाया जाना चाहिये प्रोर एव एही़ने इसकी मीटिंग शाएओ बुलानी होगी नो क्रुद्य वहाँ पास हो उ₹ पर जल्टी से जल्दी पापको प्रमल कराना चाएँ। श्रगर श्रापने ऐेसा किग्रा तो यह्ह जो ईंटेरिम घ्ररेंजमेंट है राद कामयानी के साथ चल मकता है घोर पंजाब को जा श्रकाली दोर मे गिरना पढ़ा है: उसको वहां से उठा कर भाप तरककी के रासते पर ले जा सकते है और तब आाप बड़े भाराम से और बड़ी प्रच्छी तरह से इंसाफ भरे

ठंग से भ्रगली छ्छलंक्शन मी वहां करवा सकते हैं। इस कमेटी के मुताल्लिक मैंने जो पायंट्स मिनिस्टर साहब के सामने रखे हैं, मुभे उम्मीद है कि उनको जल्दी से जल्दी श्रमल में लाया जायेगा।

गवर्नमेंट को बिल्कुल डेफिनट्ली कह देना काहिए कि फलां तारीख या महीने को, या बाकी प्रान्तों के साथ, पंजाब एसेम्बली का इलंक्शान होगा। इस बारे में तारीख़ मुकर्रेर कर देना बहुत जरूरी है।

गवर्नंर के शासन के दौर में छस मोटो, छस स्लोगन, से काम होना चाहिए कि वी मस्ट भ्रहू वि मिसfड्स्त चाफ पकाली गबर्मेंट। पंजाब में अकाली हुकूमत के दौरान जो कुष्ध दृप्रा है, उसके बारे में हमने एक डेपुटेशन के जरिये राष्ग्रति को, गवर्नर साहब को भोर प्राइम मिनिस्टर को मेमोरेंडा दिये हैं। खास तोर पर गवर्नंर के सामने हमारी पार्टी की तरफ मे पूरी तरह तफतीश करके ग्रोर पूरे सुबूतों के साथ बहुत से केसिज पेश किये गये हैं। उनके बारे में जल्दी जल्दी एनवग्रयरी होनी चाहिए। मैं इस बात से प्रसन्न भी हूं कि इस सिलसिले में कुछ्घ न कुछ हो रहा है। लेक्रिन यह्ह बहुत जरूरी है कि छस बारे में पूरे जोर के साथ श्रमल होना चाहिए, नहीं तो चार पांच महीने के बाद इलंक्शन होगा और ये लोग बच निक-लेंभ-चोर चोरी कर के हजम कर जाएगा भ्रोर पकड़ा नहीं जायेगा। यह् एनक्वायरी बड़ी मजबूती से मौर बर्गंर किसी उर के होनी चाहिए।

गवर्नर के बोर में जो सबसे परजेंट काम किए जाने बाहिए, में उनकी तरक छशारा करना घहता हूं । पहले पटियाला श्रोर पंजाब की दूसरी स्टेट्स को ।मला कर जो यूनियन बनाई गई थी-१ंप्सु, मीज़ुदा पंजाब उसको शामिल करके बनाया गया है। पेप्पू में लंड जाज, भूंमि के कानूल, कुष्थ पौर बे मौर पूराने

पंजाब में कुछ ग्रीर। पेप्सू के कानून ज्यादा प्राग्रेसिव थे । वहां भूमि-सुधारों के लिए बहुत लम्बी फाइट हुई थी ग्रौर राष्ट्रपति, डा० राजेन्द्र प्रसाद, की डेक्ले रे रान के जरिए 1953 में वहां जो भूमि-कानून बने थे, वे ज्यादा प्राग्रेसिव थे। वहां सीर्लग लाज हैं ग्रोर बहुत से दूसरे प्राग्रेसिव मेजर्ज भी पास किए गए हैं। श्रगर पेप्सू में कानून पर पूरी तरह से अमल किया जाये, तो कोई भी तीस स्टेंडर्ड एकड़ से ज्यादा भूमि नहीं रख सकता है । लेकिन पजाब में आप तीन हजार श्रौर सात हजार एकड़ के मालिक भी पायेंगे श्रोर $400,500,700$ श्रोर 900 एकड़ वाले तो श्रनेकों हैं ।

यह ग्रजीब बात है कि एक ही गवर्नंमेंट ग्रोर एक ही एडमिनिस्ट्रेशान है, एक ही एसेम्बली है, लेकिन चार पांच जिलो में एक तरह के भूमि कानून हैं ग्रोर बाकी जिलों में दूसरी तरह के । जिस तरह बगाल में गवर्नर के राज के दौरान भ्रग्रेसिव भूमि कानून जारी कर दिए गए थे, उसी तरह् पुराने पंजाब ग्रौर पेप्सू के कानूनो को एक कर देना चाहिए प्रोर पंजाब के कानूनों को पे प्सू के कानूनों के दर्जे पर लाना चाहिए ताकि मो ज़ुदा एनामेली को दूर किया जा सके। इस लिए गवर्नर के रूल में सब से पहला काम सारे पंजाब में यूनिफाइड लंड लाज लागू करना होना चाहिए।

मुभे श्रफसोस है कि संविधान में पहली, चौथी, सन्रहवीं और उन्नीसवीं एमेंडमेंट करने भ्रोर सब स्टेट्स में भूโि-सुधार के मुताल्लिक 144 कानून पास करने के बात्रजूद भूमि-सुधारों को सैबोटेज किया गया है-अन्हीं चीफ मिनिस्टरों की तरफ से, जिन को बुलाकर इस बारे मईवरा लिया गया । कल श्री शिन्दे ने हमें सँट्रल लंड रिफार्म्ज कमेटी का बयान दिया, जो श्रखबारों में भी छापा है। ग्रगर गवर्नरी दौर में, ग्रगले चार पांच महीनों में, कम से कम सैंट्रल लैंड रिफाम्ज्ज कमेटी की रीक मेंडेज़्नन्ज को ही ग्रमल में ला दिया जाये, तो हम कहेंगे कि

पंजाब के लिए संट्रल गवर्नमेंट ने—'गरीबी हटाग्रो" वाली गवर्नमेंट ने कुछ कर दिखाया है। जैसे संट्रल लंड रिफार्म्ज कमेटी ने कहा है कि फँमिली बेसिस पर सीलिंग होनी चाहिए। इस वक्त सीलिंग इडिविडुग्रल बेसिस पर है। कई लोगों के पास दो-दो हजार एकड़ जमीन है, क्योंकि उन्होंने ग्रपने कुत्तों के नाम पर, अपने नीकरों के नाम पर, ऐसे लोगों के नाम पर, जिन्होंन ग्रभी जन्म नहीं लिया है, कोई जिन की श्राईडेन्टिटी नहीं बता सकता है, जमीनें रखी हुई हैं। यह जरूरी है कि लंड रिफार्ज्ज को जल्दी इम्प्लीमेंट किया जाये ।

ग्रीन रेवोल्यूरान ज्यादातर हहीट में हुग्रा है श्रोर उसका प्रोडकान भी लंा हो रहा है। ठहीट के प्रोडकान में पंजाव सब से श्रववल है । वह संग्रल फूड कोटा मैं 51 परसेंड से ज्यादा कंट्रीब्यूट्र करता है। उसके लिए वावसे ज्यादा जरूरन छfरोेशन की है, जो कि त्रिजली पर निर्भर है तब्बजली ब्रेक-डाउन का ?लाज यह है कि यियन डैम को, ग्रोर जो प्राजेश्ट हाथ में हैं, उन को जल्दी से जल्दी पूरा किया एये, प्रिड सिस्टम एम्टाब्लिश किया जाये और भटिंडा में जो थर्मल टेशान बन रहा है, उनको ज्ञार बेसिस पर जल्दी वनाया जाते। ग्रणर पंजात्र में एक अभर्र थर्मल स्टेगन ग्रौर एक एटा'मक दलंक्ट्रिक ₹टेशन बनेगा. तभी ग्रीन रेवोल्यूशग सारे हिन्दुस्तान को फीड करने के काबिल होगा ।

सिफं ब्हीट में ग्रीन रेवोल्यूरान काफी नहीं हैं। बंगला देश से जो रेफयूजी श्राये हैं, उनको राइस सप्लाई करना होगा । हमारी राइसईटिंग पा'ुुलेश़न के लिये काफी चावल नहीं है। हम उसको इम्पोर्ट करते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि बिजली ग्रोर स्माल इरिंगेशान का पूरी तरह बन्दोबस्त किया जाये ।

पंजाब में विग इंडस्ट्रीजनहीं हैं । वह स्माल इंडस्ट्रीज का प्रदेश है और स्माल इंडस्ट्रीज भी पावर पर निर्भर हैं। इस लिए जरूरत इस त्रात की है कि गवर्नर के दौर में पावर की
[श्री तेजा fिंह स्वतन्त्र]

तरफ ध्यान दिया जाये, क्योंकि यह सबसे श्रहम सवाल है ।

पंजाब में इम्ल्लीमेंट्स का, खासकर एग्रोइम्प्लीमेंट्स का बलैक हो रेहा है। यह बात बहुत हैरानकुन है कि जों ट्रेक्टर बाहर से इम्पोर्ट किए जाते हैं, उनके लिए दुगनी से ज्यादा कीमत अदा करनी पड़ती है। इसका खात्मा होना चाहिए। डी जल वगैरह में मिलावट करके जो मझीनरी की तबाही की जाती है, उसको भी खत्म किया जाना चाहिए ।

रोपड़ में बिड़ला का जो फार्म है, उसको गवर्न मेंट फार्म में तबदील करना चाहिए। गवर्नमेंट उसके बारे में वादा कर चुकी है। जो करप्रान के केसिज हैं, उनकी एनक्वायरी फौरन पूरी करनी चाहिये।

MR DEPUTY-SPEAKER: Now, the hon. Member should conclude.

SHRI TEJA SINGH SWATANTRA : I wanted to say so many things, because I had been associated as MLA and MLC for the last fourteen years in Punjab, and therefore, we know the ins and outs of these things and they must be put before the House because we can correct these ills only during this pe:iod. but since there is not enough time, 1 shall conclude now.

MR. DEPUTY-SPEAKER : I am sorry. I have to be guided by the limitation of time that has been placed before me.

श्री सत्तपाल कपूर (पटियालए) : उपाध्यक्ष महोदग, 㔚 तो सरकार का इस बात का शुक्किया श्रदा करता हूं कि प्रैसी डेंट्स रूल होने के बाद यद घहुत ग्रच्छा काम्रीहेंसिव बिल लाये हैं जिससे पंजाब के छेलपमेंट की तरफ ध्यान दिया जायेगा। जहां तक पंजाव में क्या कुछ हुआा श्रौर अब संत वराता फनेहे मिह् वया करना चाहते हैं इस सवाल का ताल्लुक है मै इस सिलसिले में दो तीन बातें कह्ना चहना हूं । पंजाब के गुरूदारों की क्या हालन है ग्रौन दिल्ली में क्या कुछ हो रहा है ?
13.31 lirs.

## [Shri Sezhiyan in the Chair]

दिल्ली में जबसे यह संतोष सिंह का जो ग्रुप था उससे छुटकारा हुग्रा है 20 मई से लेकर 24 जून तक दिल्ली के गुरुद्वारों की आामदनी कोई 11 लाख के करीब हुई है और पिछले साल इसी पीरियड में गुरद्वारों की ग्रामदनी कोई 6 लाख के करीव थी दिल्ली में जिसके लिए संत फतेह मिह सत्याग्रह करने आा रहे हैं कि दिल्ली में बड़ा भ्रन्धेर हो गया, गुहद्वारों पर सरकार ने कबजा कर लिया जबकि यहां से इन की सफाई के वाद इन गुरुद्धारों की ग्रामदनी दुगनी हो गई। वह रुपया पहले कहां जाता था ? ग्राखिर कोई गुरुपर्व नहीं लगा, कोई मेला नहीं लगा। पीरियड वही है, उसी पीरियड में श्रामदनी टुगनी हो गई, इसका क्या कारसा है ? इसका कारएा एक ही है कि जो गुरुद्वारा कमेटीं पर काबिज ग्रुप था वह इस ग्रामदनी को खा जाता था, हड़प कर जाता था। उस पर उन का कब्जा था। खर्च ऐसा दि'वाया जाता था कि लंगर में ग्रगर 50 बोरी पकी तो एक बिन्दी श्रागे लगाकर 500 बोरी का हिसाब लगा कर दे दिया। इस तरन्तूट मचाई हुई थी ग्रकालियों ने श्रोर पंजाब के गुछदृरों की हालत ड़स से भी खराब है। ग्रभी ग्रकाली पार्टी के एक साबिक मुल्य मंत्री जस्टिस गुरनाम सिंद्ह ने कहा विछले दिनों उनका बयान श्राया कि दिल्ली में जा कुछ हो रहा है पंजाब के गुरद्धारों में उससे दस गुना हो रहा है संत जी दिल्ली के गुद्द्वारों की सेवा करने ग्रा रहे हैं। लेकिन संज जी जिसके इंचार्ज हैं पजाब के गुरुद्वारों के पहले उसको सुवार ले। ग्रफीम, राराब समग्लर, कातिल ग्रौर बदमाश श्रादमी जो हैं उनको इन गुह्दागें में पनाह मिलती है श्रगर श्रकाली पार्टी के साथ व弓 हैं । यह हालत है पंजाब के गुरुद्वरों की संत फतेह सिंह की बदौलत जो यहां सत्याग्रह करने शा रहे हैं। चार

साल तक उनके मुख़निफ चार चीफ मिनिस्टर रहे ग्मौर उन्होंने पंजाब में राज किया और हालत यह है कि 101 वर्करों का एक जत्था लेकर वह चले हैं, जहां से वह चले हैं श्रमृतसर से लेकर लुधियाने के इर्द गिर्द कहीं हैं, हर जगह उनकी सेवा हो रही है। सेवा कसी हो रही है ? यह नहीं कि हार लेकर लोग आ रहे हैं या कढ़ा प्रसाद लेकः खड़े हैं, बलिक हर जगह काले भंडे का डिमांस्ट्रेशन हो रहा है ग्रगर सेंटर की सरकार संत फतेह सिंद्ध की हिफाजत न करे तो संत जी दिन्ली न ग्रा सकें, वहां के पजार्वी उन को वहीं रखें। इतनी बड़ी सेवा पंजाब की संत फतेह सिंह ने की है । ग्राज वह् विलकुल ग्रनपायुलर हो चुके हैं। अपनी सरकार को बहाल करने के लिए, सियासी ताकत हासिल करने के लिए हर किस्म की स्टंटबाजी करना उनकी पुरानी प्रंकिस , ही है। मोर्चा लगाना, मोर्च क़ब लगाते हैं जब सरकार के बाहर होते हैं ग्रौर क्यों लगाते हैं ताकि मोर्च लगा कर लोगों को कम्युनल नारे के पीछे श्रपने पीछे लगाकर सियासी ताकत हासिल की जाय। इस किस्म का x्टंट चलाने में संत जी माहिर हैं। कभी फुकने की धमकी देते हैं कि जल जाऊंगा। तीन चार बार जलने का प्रोग्राम भी बनाया, कभी जले नहीं । श्रब मोर्च लगाने की बात है। अब वह मोचर्ग यां पर लगएएंगे । उनके मोर्चे का क्या हस्र होगा वाकी मेम्बरान को आायद उस का पता न हो, मैं पंजाब का हूं और श्रकालियों से मेरा बराब्रर वास्ता रहा है, मुभं मालूम है कि उसका क्या होगा ? वह मोर्चा फेल होगा क्योंकि पंजाब के लोग उसके पीके नहीं हैं।

जहाँ तक पंजाव में ग्रकाली पार्टीं के राज का ताल्लुलक है जिसकी रहनुमाई संत बाबा फतेह सिंह करते थे इस सरकार में क्या कुछछ नहीं तुग्रा ? हरिजनों को कुचला गया, गरीनों को दवाया गया घ्रोर सरकार का सारा काम एक मकसद के लिए किया गया कि किसी तरह ज्यादा से ज्यादा पैसा कमाना है।

पंजान के मिनिस्टरों की रेस लगी हुई थी

कि कौन ज्यादा पैसा कमाता है । ग्रकाली पार्टी के पुराने चीफ मिनिस्टर सरदार गुरनाम सिंह ने तनजिया एक बात कही थी संत बाबा फतेह सिंह को कि ग्रापके 27 मिनिस्टर हैं अ्रौर 27 मिनिस्टर पंजाब को लूट रहे है । ग्रकाली पार्टी के 57 एम०एल०ए० हैं। जो मिनिस्टर बन गए वह्टलूड रहे हैं ग्रौर जो एम०एल०ए० रह गये वह मांग कर रहे हैं कि मिनिस्टर बनाश्रो । क्या ही श्रच्छा होगा कि वह एक बस ले लें ग्रौर 57 के 57 जो उनके मेम्बर हैं उनको सबको मिनिस्टर बना कर उस बस में बिठा दें। उन $5 /$ श्रादमियों के ग्रागे भंडियां लग जायें $f_{\text {f }}$ ये 57 मिनिस्टर्स अ रहे हैं ग्रौर एक-एक बोरी उनको दे दी जाए। वह बोरी लेकर पंजाव में घूमते रहें ताकि हर मिनिस्टर पंजाब को जितना लूट सके लूट ले...

एक माननीय सदस्य : सरदार प्रताप सिंह कैरों के समय भी ऐसा ही हुग्रा था ।

श्री सतपाल कपूर : हां, हो सकता है कि ग्रापकी बात ठीक हो। श्रीर अगर यह बात उस वक्त भी हुई है तो उससे मुभे कोई खुखी नहीं है.। में उसमें ग्रापसे इत्तफाक करता हूं ।

सवाल यह है कि डमोकेसी के क्या तकाजे हैं ग्रौंर क्या ग्रकाली पार्टी के राज ने उन तकाजां को पूरा किया ? मेरे पास कुछ ऐसी फिगस हैं जो में आ्यापकी खिदमत में रखना चाहता हूं । पंजाब के हमारे पिछले चीफ मिनिस्टर सरदार प्रकारा सिंह बादल ने कहा कि ग्रगर मेरे खिलाफ एक भी इल्जाम साबित हो जाय नो मैं पबिलक लाइफ से रिटायर हो जाऊगा। में सभापनित महोदय के मार्फत मिनिस्टर साहब मिस्टर के० सी० पन्त से इतना ही चाहता हूं कि ड़ल्जाम सीवे और साफ हैं अ्रीर वह इल्जाम यहां उनके पास पहुँच चुके हैं। अव एक तह्कीकाती कमीरान बनाइए । उस कमीशन के सामने बादल साहब को पेश होने का मौका दीजिये श्रौर दूसरे लोग जो इल्जाम लगा रहे हैं उनको अपप पेश होने का
[श्री सतपाल कपूर]
मौका दीजिये। पब्लिक लाइफ से तो ग्रपने ग्राप रिटायर हो जायेंगे जब जेल जाएंगे। उन की बीबी के नाम डब्माली ट्रांसनोर्ट कम्पनी है । उसकी मैनेनिंज डायरेक्टर मिसेज प्रकाशा सिस बादल हैं। उस कम्पनी को इस दरमियान में कितने परमिट्स दिए गए ग्रौर कितनी ट्रिप्स उसकी बढ़ाई गई, इसकी एन्ववायरी करवा दीजिये । सरदार प्रकाश सिह बादल ग्रोर उन के भाई सरदार गुरुदास सिह बादल दोनों सगे भाई हैं ग्रीर उनके दोनों के दो लड़के हैं, नाबालिक लड़के हैं। उनके नाम भटिंडा में ग्रभी कितनी जमीन खरीदी गयी है, इसकी जांच कर लीजिये। डबमाली ट्राँसपोर्ट कम्पनी के एक हिस्सेदार के नाम लुधियाना में लाइसेंस दिया गया। उसकी़ एन्क्वायर्श कर लीजिये । पंजाब के बारे में ग्रभी सरादार तेजा संह् स्वतंत्र ने कहा कि वहां बड़ी इंड ट्रीज लगनी चifeए, वह दुरस्त है। लेक्न ! 967 से लेकर 7 i तक पंजाब्र में भकाली पार्टी का राज रहा। मिड टमं पोल हुग्रा। चार बार सरकार बःी। लेकिन डामिनेंटंग पार्टी श्रकाली पार्टी रही। संटर ने पजाब क. 16 बढ़ इंडस्ट्टियल लाइसेंस दिए ट्रैंक्टर फैक्ट्री के पोलिसटर के श्रौर चीजों के, वह सारे लाइसेंस उन्होंने इस्तेमाल नहीं किये क्वोंकि चीफ fमनिस्टर साहब यह काम करते रहे कि जो बड़ं-बड़ इंडfिट्रियलिस्ट बिरला, डालमिया, थापर fसहानियाँ वंगिरह हैं उनसे वह् बातें करते रहे और बातें कर करा कर उनसे पंसे लेते रहे ग्रौर कोई छंड्ट्री पंजाब में सेट श्रप नहीं की। इसकी जिम्मेदारी क्या सेंटर पर श्राती है ? इसकी जिम्मेदारी किस पर ग्राती है ? श्रापको इंडस्ट्रियल लाइसेंस मिलते हैं ग्रोर श्राप उसको लेकर बेच देते है, उनको हिस्सिदार बनाते हैं और उस के बदले में श्राप उनसे पंसे लेते हैं। यह इल्जाम लगा हुग्रा है। मेरे पास मेमोरेंडम हैं । पाँच सी रुपये से लेकर 25 लाख रुपये तक के इल्जामात इस मेमोरंबम में शामिल हैं। सरदार प्रकाशा सिंह बादल के समय में एक सिनिस्टर थे तेजा

सिंह उन्होंने तो हद कर दी। इंडस्ट्री का भी मुहकमा उनके पास था श्रौर कभी ग्रापने ऐसा नहीं सुना होगा कि किसी मिनिस्टर ने ग्रपने ही रिइतेदारों के नाम एक्सपोर्ट कोस्रापरे टिव सोसएइटी खोली हो। हमारे यहाँ एक मिनिस्टर थे सुरजीत सिंह उन्होंने एक एक्सपोर्ट कोअापरेटिव सोसाइटी अपने ही रिइतेदारों के नाम पटियाला में बनवाई। एक्सपोर्ट ग्रोर इम्पोर्ट का काम कोश्रापरेटिव सोमायटी करे । हमारे चीफ मिनिस्टर साहब को खयाल ग्राया कि पैसा है ग्रीर पैसा ग्रा रहा है इसलिए उन्होंने चांदी के वर्तन पटियाला में खरीदे-सी बड़े थाल, तीन संं कटोरियां तीन सौ व्लेट्स —सी श्रादमियों के खाने के लिए चांदी का पूरा सेट खरीदा। में प्रकाश सिह बादल को ग्राज से नहीं पिद्छले बीस सालों से जानता हूँ कि कितनी उनके पास जमीन है ग्रोर कितनी उनकी ग्रामदनी है । यह ठीक है कि उन्होंने वह जमीन अपने मुख़लिफ रिะतेदारों के नाम ले रखी है। यह भी ठीक. है कि बाग के नाम पर, गार्डेन बनाने के नाम पर पाँच गुना पानी लेकर वे फरोख्त करते हैं लेकिन इतनी बड़ी हैसियत प्रकाशा ईसह बादल की नहीं रही कि बाजार से सौ-सौ बड़े थाल चांदी के खरीदें। पीतल के नहीं बल्कि चांदी के ही यह सारे बर्तन उन्होंने खरीदे हैं जिसमें कि सो आदमियों को श्रपने घर पर वे खाना खिला सकें इतना बड़ा इन्तजाम उन्होंन चीफ fमनि॰टर बनने के बाद किया है ।

जहाँ तक इस बात का ताल्लुक है कि पंजाब के लोग श्राज खुश हैं तो क्यों खुश हैं ? इसलिए खुश हैं कि एक झ्रन्चेरगर्दी करने वाली सरकार, एक करष्ट सरकार, एक नालायक सरकार, एक ऐन्टी पीपुल सरकार, एक ऐन्टी किसान मजदूर सरकार से उन लोगों का छ्रुटकारा हो गया है।

जहां उक फाजिल्का इइयु का सवाल है, बहुत बातें कही जाती हैं। लेकिन में यह मेमो-

रेंडम मिनिस्टर साहब की खिदमत में पेशः承 कर रहा हूं ताकि वे इस पर ध्यान देकर इंक्वायरी करवा सकें।

MR. CHAIRMAN : It is not to be handed over to him in the House. He can hand it over privately, or, with the permission of the Chair, he can lay it on the Table of the House. The Speaker will go through it, and after his permission is given, it can bs laid on the Table of the House.

भी सतपाल कपूर : भ्रब मैं ग्रापसे इतनी ही दर्खस्त करना चाहता हूं कि आज पंजाब में सबसे बड़ा मसला है कि ग्रकाली पार्टी पर कोन लोग काविज हैं-वही बड़े-बड़े जमीदार श्रौर १्यूडल एलिमेंट्म और उनसे द्युटकारा कसे हो ? अ्यकाली पार्टी का नजरिया है कि सिख के नाम पर सिखों को इस्तेमाल किया जाये, बड़े जमीदारों के इन्ट्रेस्ट के लिए, बड़े सिख जमीदारों के इन्ट्रेस्ट के लिए छोटे गरीब किसान fिखों का इस्तेमाल किया जाये लेकिन छोटे किसानों के लिए हम वया करना चाहते हैं ? पजाब में जमीन सुधार के दो बड़े ऐ尹्ट थे एक तो भ्रस्टंःहाइल पेप्सू के भटंटारा, पटियाला, संगहरू के लिए ग्रोर दूसरा लुधियाना ग्रम्तसर, जालंधर गुरदासपुर, होशियारपुर के लिए। मैं चाहना हूं कि इन दोनों ऐंच्ट्स की जगह पर एक नया ऐक्ट बनाया जाए। श्रौर पेप्सू ऐकट में श्रोर पंजाब के ऐक्ट में यह लिखा हुग्रा है कि जो जमीन सरप्लस भी होगी वह जमीदार के पास ही रहे़ेगी जब तक कि घह मजारे को एलाट नहीं हो जाती लेकिन चूंकि जमीदारों की सरकार है, जमीदारों का यसर है श्रोर जमीदार श्रफसर हैं वे उस जमीन को मजारे को एलाट ही नहीं होने देते। हमारे भ्रकेले फीरोजपुर जिले में एक लाख 8 हजार एकड़ जमीन सरप्लस हुई है जिसमें से अ्रभीतक 9 हजार एकड़ जमीन ही मजारों को दी गई श्रौर बाकी जमी-

[^0]दारों के कब्जे में ही है। इसलिए नया ऐक्ट बनाया जाए ग्रोर पेप्मू ऐक्ट को सारे पंजाव पर लागू किया जाए लेकित पेप्सू ऐक्ट में जितने भी एग्जेम्बान्स दिए गए हैं बाग के लिए या मेकेनाइज्ड फार्न्स के लिए उनको विदड्रा किया जाए ग्रौर लंड रिफा सं कमेटी ने जैसा यहाँ रेकमेंड किया है उस तरह फेमिली सीलिंग वहां पर लगनी चाहिए।

इसके ग्रलावा एक बात यह है कि ग्रकालियों ने सरकारी मुलाजिमों को बहुत बुरी तरह कुचला है, उनको जेल भेजा है, उन पर लाठीचार्ज किया है अ्रौर उनको विक्ञिमाइज किया है। $16 \div 0$ मुलाजिमों पर मुकदमे हैं। उनको फोरी तोर पर वाधिस लेना चाहिए। श्रौर जो इंटेरिम रिलीफ का सवाल है, जिसके लिए एजिटेशन उठा था, वह्ट इटेरिम रिलीफ सरकारी मुलाजिमों को मिलनी चाहिए।

यद्री क्षिछ बातें में क्रापके जरिए से मिनिस्टर साहब से कहना चाहता हूँ कि फोरो तौर पर ईंचवायरी कमीशान बनाया जाये, जो ए स निनिम्टर हैं उनके fिलाफ और अ्राज भी पजान के एङमिनिस्ट्रंशन में कुछ करष्ट श्राफिशियल्स मोजूद है, कुछ पुराने लोग नो प्रकालियों को फायदा पहुँचते थे वे ग्राज भी एडमिनिय्ट्रेशान में बंठे हुये हैं इस लिए इस ब्यूरो हैसी को साफ करना भी बहुत लाजमी है। यही बातें हैं जिनको में कहना चाहता था।
†SHRI J. M. GOWDER (Nilgiris) : Mr. Chairman, Sir, I would like to hut forth a few suggestions of mine on the Punjab State Legislature (Delegation of Powers) Bill now under discussion.

Sir, as you are aware, Akali Dal is a regional party representing the hopes and aspirations of a minority section of our society. With the object of securing and furthering the interests and welfare of this section, this party ceaselessly agitated for
accorded the necessary permission, the Table.
Tamil.
[Shri J. M. Gowder]
a Punjabi speaking State and long years for ultimately achieved that goal when a separate State of Punjab was constituted.

When the Akali Dal was in a position to form a Government in the State of Punjab, Sardar Gurnam Singh was elected the Chief Minister. The ruling Congress Party had to sit in Opposition in the Assembly. As the ruling Congress Party could not suffer for long its role as an Opposition Party, somehow or other they wanted to dislodge the Akali Dal from the seat of power. There was no consideration on its part as to whether Akali Dal Government was working for the good of the people of the State or not. The Congress Party successfully prodded Sardar Gurnam Singh to part company with the Akali Dal. Sardar Gurnam Singh was also given the assurance of full support if he tried on his own to form a Government in the State. Sardar Gurnam Singh resigned from his Chief Ministership and also left the Akali Dal. But, along with his supporters, when he tried to form a Government in the State, ths Congress Party went back on its plighted word with the result he was left high and dry. Much to the chagtin of the ruling Congress Party, Sardar Badal of the Akali Dal, which the Congress Party wanted to dethrone, became the Chief Minister and formed again Akali Dal Government. It was obvious to everyone that the Congress Party played a questionable role in splitting the Akali Dal. But the Badal Ministry also did not last long and I have no desire and time to go into the manoeuvres of the Congress Party in bringing down the fall of Badal Ministry. There is no denying the fact that the Congress Party at this juncture started entertaining the hope of forming an alternative Government in the State.

Sir, the Governor of Punjab, Shri Pavate, who was really very keen in putting an end to the politics of defections from Punjab, recommended to the President the dissolution of Legislative Assembly and the imposition of President's rule. This correct and prompt action of the Governor under the circumstances was soverely criticised by not only the rank and file of the ruling Congress Party but also by the leaders including the Prime Minister as being hasty and improper both inside this House and outside. When the Central Government readily accopted the advice of the Governors
in some other States for the imposition of President's rule, the outbursts of anger on the action of the Governor of Punjab is incongruous. It is not so difficult to understand the reasons for decrying the role of the Governor of Punjab. The hope of the Congress Party to form a Government there got frustrated, even after splitting and dethroning the Akali Dal from Power. Here, I would like to remined the House that the very same Congress Party extended their unqualified support to the Ministry of Sardar Lachman Singh Gill whose party had only 14, 15 Members in the Assembly.

I cannot but entertain the feeling that the ruling Congress Party's sole motive is to prevent any regional party, whether it is the Akall Dal or any other opposition party, from beecming a potential political force to the extent of ruling a State. Can anyone say that the Congress Party is setting up sound democractic traditions for posterity by adopting such patently undemocratic approach? In the recent elections to the Lok Sabha, the people of the country have returned the ruling Congress Party to power with a massive majority. The old Congress Party was vanquished beyond redemption. As the ruling Congress Party appealed to the people as the champions of the downtrodden and the harbingers of a happy new era, the people reposed their full faith in the professions of the ruling Congress and made it the ruling party. In our country, elections are held so that the people may choose the political party which should govern them. Whether it is at the State level or at the Central level, whichever party is elected by the people as the majority party to form a Government, there is the constitutional guarantee that party should be permitted to govern the State or the Centre for an uninterrupted period of five years. If it happens that in a State a party other than the Congress comes to power, the Congress in the Centre should have a sense of constitutional propriety and allow that party to rule the State for the full term of five years. But what do we find? The Centre shows signs of impatience and intolerance immediately after the formation of Government even in a State by an opposition party. With all the powers concentrated in the hands of the Central Government, this attitude is not a happy portent for the future of democracy in our country. I am prepared to forget whatover
has hapnened so far. But, I would appeal to the Centre that it should shed its narrow outlook of dislodging a duly elected opposition party Government in a State in the interest and well being of our nation.

शी साघू राम (फिल्लोर) : सभापति महोदय, पजाब का मसला ग्राज हाउस के सामने है। वहां गवर्नर रूल है जिसको ग्रभी थोड़े ही दिन हुए हैं। लेकिन इससे पहले वहां पर अ्रकाली सरकार काम कर रही थी। उन्होंने करप्ञान की हद कर दी। एक छोटा सूबा होने के बावजूद भी वहां 27,28 मिनिस्टर बना दिए गए। 104 टोटल स्ट्रंग्थ अ्रसेम्बली की, उनमें में 27 , 28 मिनिस्टर बना दिए गए, ग्रोर उनके ग्रखराजात का श्रंदाजा लगाया जाय तो पंजाब का दिवाला निकाल देने वाली बात थी। एक-एक जिने मे तीन-बीन ग्रौर चार-चार मिनिस्टर होते थे ।

पंजाब में फिरकापरस्ती का राज्य ग्राया, फिरका परस्त इसलिए कहता हूं कि ग्रके T ग्रकातो दल ने ग्रभना राज्य कायम किया। हिन्दुस्तान की अ丁जादी के बाद उन्हें पहले मौका मिला कि पंजाब में वह श्रपना रून कायम कर सकें। उन्होंने जो काम किए उससे पंजात्र के लोग हंहाकार करने लगे, थोड़े ही दिनों में। गरीज हरिजनों का उन्होंने सफाया किया, हर एक गांव में जनका सोशल वायकाट किया गया कि कम वेजेज पर उनका काम वह क्यों नहीं करते। एक-एक थाने में जत्येदार वंड जाते थे ग्रौर वहां पर जो केस रजिस्टर किजा गया उसके पैसे गिनवा कर शाम को लेकर श्रपने घर ग्राता था। गुरुद्वारो में पोलिटिकल बातें होती धीं, दूसरों छं
 मेंट को होश ग्राया उस पार्टी में ग्रापस में कुछ भगड़ा पड़ा इसलिए वहां पर घंसीङंच्ट रूल लागू किया गया। पजात्र के लोगों ने बुरिया मनायीं कि भूखों से हमारी जान वची।

गरींच लोगों के साथ वहां कितने जुल्म पोर तश हूद हुए उसकी कोई इन्तहा नहीं। मेरे

जिले जालंघर के हल्के में 6,7 कर्ल हुए ग्रोर वह भी सिर्फ हरिजनों को थाना नूरमहृल ग्रोर थाना वंगा में हरिजनों को कटल किया गया, और भी कई गावों में कत्लो गारत का चककर ग्रकाली मिनिस्ट्री ने किया, ग्रौर पुलिस ने कातिलों के खिलाफ कोई रिपोर्ट दर्ज नहीं की। कुछ ग्रफसर वहां ऐसे मो $\begin{gathered}\text { दू हैं जो ग्रकाली सर- }\end{gathered}$ कार के समय से हैं। फлवाड़ा में एक डा० एम० एल० मल्होत्रा हैं. वह रिखवत लेते थे कत्लों के केस में । fिनिस्टर तक उसकी ऐप्रोच थी ग्रौर मिनिस्टर को पैसा पहृँचा देता था। लोगों ने काफी जोर लगाया कि इस बूचर को यहां से हटाया जाय, लेकिन किसी ने नहीं सुना। गवर्नर रूल लागू होने के बाद भी उसके खिलाफ कोई ऐकशन नहीं लिया गया, ग्रौर उस को सस्पेंड नहीं किया ।

मेरे पास मेरे हल्के से लिख कर भ्राया है कि एक 15 साल का हरिजन लड़का कट्ल कर दिया गया ग्रोर उसकी लाश को नहर में बहा दिया गया। उस डाकटर से उसका पोरटमाटंम कराया गया, श्रैर दो हजार रु० लेकर उसने उस लड़के की उम्र 15 साल के बजाय 29 साल लिख दी। में भी गवनंर साहत्र को इस डाक्टर के बारे में खत लिखा था ले तक कोई जवाब गेरे पास नहीं ग्राया। मेरे अ्रपने यहां एक केस हुग्रा, मेरे श्रपने लड़के की बहू की डिलिवरी होने वाली थी, मेर लड़का उस डाकटर को लेने गया यह दो. ढाई महीने की घात है, उसने कहा ग्रभी ग्राता हूं। किर लड़का गया तो उसने कहा कि मरीज को मेरे पास ले ग्रा 才े। लड़की के पेx में मराहुग्रा बच्चा था। जब लड़के ने देखा कि यह डाकटर अाने वाला नहीं है तो रिक्शा कर के दूसरे मुहल्ले से लेडी डाकटर को लाया श्रोर उसने लड़की की जान बचायी । उस डा टर के खिलाफ विजिलेंस ने छापा मारा. 200 रु० रिख्वत के दिवेय, मीके पर रैड हैंडेड पकड़ा गया, लेकिन फिर भी वहीं बैठा हुग्रा है श्रौर उसको सस्पंड नहीं किया गस़ा। सबभ में नहीं भाता कि
[श्री साधू राम
गावर्नर के राज्य में वह दया चीज चल रही है जो करर्शन को दूर नहीं किया जा रहा है ? शी त्रिलोचन सिह रियासती की तरफ से मेमोरेन्डम दिया गया है कि मिनिस्टरों के खिलाफ जांच करके केस चलाये जायें। लेकिन अभी तक उस बारे में कुछ नहीं हुग्रा है । ग्राज पंजाब में ग्रकालियों के रिशतेदारों ने जबरदस्ती हरिजनों की जमीनें ग्रपने कहजे में ₹ी हुई हैं, लेकिन उनके खिलाफ हृरिजनों के केसेज रजिस्टर नहीं किये गये हैं। उनसे जबरदस्ती बेगार ली गई, श्रोर उनको अपने घरों में बन्द किया गया लेकिन सेन्ट्र गवर्नमेंट ने अ्रभी तक कोई ऐक्शन नहीं लिया। वह वहां बंडे क्या कर ग्हे हैं। हम लिख २हे हैं कि लोग हाहाकार कर रहे हैं, लेकिन गखर्नर के कानों में ज़्ं नहीं रेंगती। मुभे इसका अफसोस है ग्रोर मैं सेंट्रल गवर्नमेंट से कहना चाहता हृं कि वह्।। टीचर ट्रांसफ, रिये गये ग्रोर हजारों लोगों को घर से वेघर कर दिया गया। गवर्नंमेंट ग्रब उनकी वापसी के लिए तंयार है। वहां पर उस जगह के एम्पलाईजज के इंटेरिम रिलीफ का भ.गड़ा है ग्रीर किसानों 7 बिजली के बारे में जो इरेगुलुर्लिड़ी है, उनची फमलों को पानी नहीं मिलता, इवर खाद की कीमत बढ़ी हुई है ट्रंक्टर पर सेंट्रल गवर्नमेंट ने ज्यादा टैकस लगा दिया है, किसान भाई तो रहे हैं। हस कदर पंजात्र में अकाली राज्य की बर्कतें हुई हैं। ग्रोर कभी-कभी हमारे जन संघ के भाई उन₹ी द्रिमायत करते हैं, उन फो बचाने के लिए। वह उनके बहुन बड़े मित्र है।

14 hrs.
श्राज सन्त पनेने मिह सत्याग्रह नरने की धमकी दे रहे हैं पंजात्र का एक परसेंट्र्रादमी भी सन्त फ.तेह fिंह के सध नहीं है. घ्रोग न ही उनको लोग पमन्द्य क्न्ते हैं। हमने बड़ी मूरिकल ये जान बच्चाई है अफाली राज्य से। इस चनन

है। सन्त फतेह सिह जत्था ले कर चले ग्रा रहे हैं, लोग उनके जत्ये की मुखालिफत कर रहे. हैं, उसके खिलाफ नारे लगा रहे हैं, लेकिन सेंट्ल गवनंमेंट खामख्वाह परेशानी में है। सन्त फतेह सिह खुद क्या पहाड़ ढा देंगे ? उनके दिमाग में यह पहले से है। में सेन्ट्रन गवर्नमेंट को ग्रागाह कर देना चाहता हूं वह इसका सख्ती के साथ मुकाबला करे घ्रेर फिकापरस्ती को आज देश में सख्ती से कुचले। नहीं तो इस तरह से डिमाक्रसी का राज्य चलने वाला नहीं है और न सेकुलरिज्म चल सकता है।

में एक प्रपोजल रखता हूं, मिंने पहले भी उसको रक्खा था, कि सेंट्रल गवर्नमेंट जो हमारा कांनिट्यूशन है उसके अन्दर घमेंडमेंट करे। अ्भगर किसी स्ड्ट में एक करोड़ के पीछे दस लाख ग्रादमी किसी पालिटिक्ल पार्टी के मेम्बर न हों श्रौर एक फिर्के के हों, तो उसको पोलिटिकल पार्टी न माना जाये। हम ग्राज कांस्टिट्ट्यूर्यन में तरमीम कर दें। हमारे मुल्क में बसने वाली जितनी भी चिरादरियां हैं, जितने भी मजहव हैं वह सबके सब पोलिटिकल पार्टी में शामिल हो जायें श्रोर जब उस पार्टी की गिनती दस लाख फी करोड़ हो जाये तभी उसको पोलिटिक्ल पार्टी तसत्वर किया जाये। घर्म के नाम पर देड में एक वातावररा पैदा करने को, चाहे जन संघ हो, चाहे अकाली पार्टी हो, चाहे मुसलिम पार्टी हो, इसी तरह से रोका जा सकता है। fिन्दुस्तान में लोगों के ईववल राइट्स ग्रा सकें ग्रोर डिमाक्सी जिन्दा रह सके, इसके लिये इस से श्रच्छा कोई ग्रोर तरीका नहीं निकल सकता। यह लोग घमं के नाम पर लोगों को भड़काते हैं यह कह कर कि इमाग पन्य खतरे में है, हमारा $f$ नب्न्नम वनररे में हे. हमारा डसलाम खतरे में है। हसको इसी तरह से रोका जा सकता है।

मत्र लोग जानते हैं कि सन्न फतेह़ fिह घमं के माम पर लोगों को बगंला कर एक जल्था

फिग्रर करती हैं गद्वारों के मसले में। ने क्या इंटरफि.ग्रोंस कर दिया । गुद्धाईं पर भगड़ा चल रन्ा था। निलेंप कोर के जटॅथे ने सीसगंज गुछद्दारे पर कबजा कर लिया था। उस से सन्तोख सिह का जन्था लड़ाई कर रहा था । भ्रगर गवर्नमेंट ला ऐंड श्राडर्र मेनटेन न करे तो कहेंगे कि गवर्नमेंट जानबूभ कर लोगों को मरवा दिया। ग्रगर ला ऐंड ग्राडंर को मेनटेन करती है तो भी शिकायत करते हैं। ग्रगर गवंनेंट ने हुने हृये लोगों को ले कर के- श्राज ग्रकाली पार्टी के ही सिख नहीं, दूसरे सिखों में भी नेक पादमी हैं, गुछद्धारे का प्रबन्ध सम्भलवा दिया तो क्या त्रुरा किया ? लेकिन सन्त फनेह सिंह श्राज यह मसला उठा रहे हैं कि गवर्नमेंट हमारे घर्म में मदाखिलत कर रही है। गवर्नमेंट ने ग्रगर वहाँ मदाखिलत किया तो क्या वहां का रुपया गवर्नमेंट श्रपने खजाने में दाखिल करती है ? लेकिन जब तक वह सन्त फतेह सिंह के पास नहीं जायेगा तव तक धर्म का नुंसान हो जायेगा। जब वह सन्त फतेह सिंह की तिजारी में चला जायेगा तब उसका ठीक इस्तेनाल होगा भ्रौर गुहद्धारे ठीक रहेंगे। भ्राज वह इस तरह की बाते करके लोगों को बर्गला रहें हैं। सेंग्रल गवर्न मेंट को इस तरह की धमकी में नहीं ग्राना चाहिये। आज इस तरह के फिकापरस्त लोग पंजाब को खराब करना चाहते हैं। उनको सణती से दबाया जाये । पहले भी इस तरह के लोगों से डर कर सेंट्रल गवर्नमेंट ने नुक्सान उठाया है, यह में महसूस करता हूं।

जिस समय सेंट्रल गवर्नमेंट की तरफ से पंजाबी सूबा माना गया था उस वक्त भी मैंने कहा था कि वहां के हरिजन, वहां के हिन्दू ग्रोर जो काप्रेसी सिख हैं, वह सब इस चीज के खिलाफ हैं, लेकिन सेन्ट्रल ग्रवर्नमेंट ने धमकी में अ- कर हरिगाएाए को ग्रलग कर दिया, हिमाचल को झ्रलग कर दिया और वंजाब को इभना छोटा कर दिया श्रौर उसकी श्रामदनी का भट्ठा बैठा दिया। इसलिए में सेन्ट्रल गवर्नमेंट से यह म्र्र्ष करूंगा कि सन्त फतेह सिंह के ज़त्ये की जो

दाते है गुरुनाम fिंद्ध वर्गेरह भी उमकी ढोल की ५ोल खोल २हे हैं क्रीर जो दूसरे ग्रकाली लोग हैं वह उनको स संचा साधित क.र रहे। उनसे उरने क. दोई जह हरत नहीं है। दूसरी बात यह है कि वट्ढां के दिन्दू, हरिजन ग्रौर तमाम वहाँ के प्रोग्रेमिव माइन्डिड fिख सेंट्रल गवर्नट के काम की सराहना करते हैं कि वह बहुत ग्रच्छा काम कर रही है जो कुब्द उसने गुह्द्वारों के मामन में किया है। में चाहतता हैं कि ग्रकाली fिनिस्ट्री के विलाफ जो करप्रान के चार्जेंज हैं उनकी बहुत जल्दी एंच्वायरी कराई जाय और गवनंर को जरा तेज किया जाये । में समभूा हूं कि गवर्नर कोई ढीलः ग्रादमी लगा हुआ है, जिसने ग्राज तक जिन लोगों के खिलःफ चार्जेज लगायें गये हैं उनके खिलाफ कोई ऐकशन नहीं लिया है। जितने भी चार्जेज लगायं गये हैं फौरन उनकी एन्ववायरी करवाने का इन्तजाम होना जाहिए। पंजाब के एम्पलाईज को जो इंटरिम रिलीक टेना है वह फौरन दिया जाय ग्रौर वहां के एम्पलाईज के खिलाफ जो मुकदमें चल रहे हैं उनको वापस लिया जाये। लेबर क्लास को मिल मालिकों के शिकंजे से बचाना चाहिये। ऐसे संकड़ों नहीं हजारों केसेज हैं जिनमें हरिजनों को जो राहत मिली थी उसको अकाली राज्य ने ख़त्म कर दिया था। उन लोगों को जरा हौसला दिया जाये ।

मैं ज्यादा वक्त न लेते हुये सिफं एक बात कहना चाहजा हूं कि मिनिस्ट्री का जो चक्कर सब झ्टेटों में हो जात: है उसके लिये एक कांन्टट्यूश़न श्रमेंडमेंट लाया जाये कि जितनी एम० एल० एज० की स्ट्रंग्थ हो, सिर्फ उसके 10 परसेन्ट हा fिनिस्टर बनायं जायें, चटह किसं पाटर्ट की गवरंमेट बने या न बने। अाज tहन्दुस्तान में डिमोक्रेशी को बचाने के tलए, माइनारटी कम्यूनिटीज को बचाने के लिए, सट्रल गवनेमट ही कुछ कर सकती है, इन्दिरा गाधां काँ गवनंमेंट हीं कुछ कर सकती है । मैं उसकी सराहना करता हूं म्रौर वहां के गवनंर को जरा तेज
[श्री साधू राम]
करने के लिये बार-बार होम fिनिद्टर से ग्रपील करता हूँ ।

श्रो मुलितयार $f$ ह मालक (रोहतक) : सभापति महोदय, हनारे होम fिनिस्टर श्री पन्त ने पंजाब के बारे में जो बिल रक्खा है में उसकी मुण्वालिफत नहीं बल्कि न्रिमायत करना हूँ. उसका स्वागत करता हूं क्योंकि पंजाब के प्रन्दर पातुलर गवर्नेंटं आने के बाद और घ्रसेम्बली भंग होने के बाद यह्र स्टेप कुदरती है कि यह बिल लोक सभा के सामने ग्राये ग्रोर हमारे राष्ट्रपति को पंजाब के बारे में सारी पावसं दी जायें।

दो तीन बातें हैं जो उधर के मेम्बरों ने कही हैं। लेकिन कई दफे कहा जाता है कि काल ए व्वेड ए स्पेउ। यह तो ठोक है, लेकिन शायद हाथी के दांत खाने के और दिखाने के भ्रोर होते हैं। बातें इस हद्द तक पहुँच गई, घैर पंजाब के श्रन्दर ग्रकाली गवर्नमेंट में इतनी गड़बड़ियां हो गयीं कि कोई उनको डिफेन्ड नहीं करता। वह वाकई भष्टाचारी गवन्नमेंट थी, फि.कापरस्त गवर्नमेंट थी। इसमें कोई दो रायें नहीं हो सकतीं। लेकिन नब श्री साचू राम ने बोलते हुये कहा कि वहां पर इतने मिनिस्टर थे कि एक-एक जिले की बांट में तीन-तीन, चारचार मिनिस्टर आते थे, तो कम से कम वह श्रपनी तरफ भी तो देखें। हरियागार की तरफ भी उनको देखना चाहिए। वहाँ छः जिले हैं। वैसे तो पांच जिलों से ज्यादा नहीं बनने, लेकिन छ: छोटे छोटे जिले हैं लेकिन चाइस fिनिम्टर हैं। बांट में कितने आते हैं, इसको वह देखें। कोई मिनिस्ट्री बनती या न बनती, लेकिन ग्राप इसको किस तरह से जसिटफाई कर सकते हैं ? फिर भी मैं इन चीजों में नहीं जाना च'हता। बड़ी श्रचछछी बात श्री साधू राम ने कही कि 10 परसेंट fिनिस्टर होना चाहिए। मैं हसकी हिमायत करता हां। हालांकि सेंद्रल गवर्नमेंट को 1967 में इस बात को

करना चाहिये था, लेकिन उसने श्रभी तक न्हीं किया है।

अ्रभी श्री दरबारा सिंह ने पंजान के बारे में कई बातें कहीं। मु के इस बात की खुरी है कि उन्होंने ग्रपनी मुउारक जबनन से यह बात कही इस हाउस के ग्रन्दर कि प्राइम fिनिस्टर ने चण्डीगढ़ और फाजिलका व ः्रबोटर के बारे में पंजवब ग्रोर हरियाएाा के बीच में जो अवार्ड दिया उसके ऊपर उनको पाबन्द होना चाहिए। अऋाली गवरंमेंट उस वक्त चंडीगढ़ ले ॠई यह्र कह कर कि फाजिल्का श्रोर अबोहर हरियाया को दे दिए जायें। लेकिन श्रब उसने द्नको वाविस मांगना शुरू कर दिया है। मुभे बड़ी परेश़ानी होती है यह देख कर कि हृमारे सरदार दरजारा मिंह हाउस के ग्रन्दर खड़े हो कर जो कहते हैं उससे बिल्कुल उलटी बात कांग्रेस पार्टी कहती है। श्रकाली गवर्नेंट को इसके लिए एक्यूज भी किया जाता है। लेकिन आप देखें कि ग्रभी ग्रभी 17 वा 18 तारीख को प्राविशाल कांग्रेस क.मेटी की मिटिंग हुई थी ग्रोर उस में शायद सरदार दरबारा fसह भी शामिल हुये हों, शायद वह भी उसके मेंम्बर हों। वहां क्या प्रस्ताव पास किया गया हैं, यह में उन से जानना चाहना हूँ। में बसूक के साथ कह सकता हूँ कि उस मीटिंग में सेन्टर के फारेन fिनिस्टर भी शाामल हुय थे जो कंबिनेट रैंक के हैं ग्रोर उस मीटिग के श्रन्दर श्रौर उनकी मोजूदगी में एक रेजोल्यूशन पास किया गया कि फाजिल्का ग्रोर ग्रबोहर के इल:के पंजाब को दिए जाएं। में जानना चाहता हूं कि इससे ज्यादi अफसोसनाक बात ग्रौर क्या हो सकती है ? सरदार दरवारा fिंह हाउस के ग्रंदर दूसरों को बहकाने के लिए ग्रोर उनकी सुगनूदो हासिल करने के लिए कुछ भी कह सकते हैं लेकिन जो प्रस्ताव पास किया गया है, उसको अ्राप देखें । हमारे पन्त जी ग्रीर मिवा जी एज होम मिनिस्टर कई बार बयान दे चुके हैं कि यह फेसला लागू किया जाएगा। लेकिन जिस तरह

से सेन्टर पर दबाव डाला जा रहा है, उससे मुभे लगता है कि इनक इरादे नेक नही हैं। इनके पार्टी के इरादे नेक नही हैं ं छुनाव अा रहे हैं ग्रौर तब तक पता नहीं क्या क्या दवाव सरकार पर डाले जाएंगे । हुनाव के बाद भी पता नहीं किस-किस प्रकार के दबाव डाले जान्येंगे ग्रोर किस तरह से सेन्टर को ग्रसर श्रंदाज करने की कोशिए़ की जाएगा। जब प्रा।वशल क.ंग्रेम कमेड़ी की मीटिटग के ग्रन्दर जिम्में फागेन मिनिस्टर भी शामिल थे ग्रोर शायद दरवारा सिह जी भी उस मीटिंग में हाजिर थे, उन सबकी हाजिरी के श्रन्दर डस प्रकार का प्रस्ताव पास किया जाता हैं तो मेरी समभ में नहीं ग्राता है कि यहां पर कंसे दूसरी भाषा वन डम्तेमाल कर सक.ते हैं, द्सरी जबान के श्रन्दर कैमे बोल सकते हैं । बहरहाल दरबारा सिह जी की र्मे सगहना ग्रीर तारीफ करना चाहना हूं कम श्रज़ कम इस बात के लिए कि उन्होंने श्रपनी राय स्पष्ट तोर पर यहां जाहिर की है। हमारे पन्त जी बहुत शारीफ हैं। में उन से प्रार्थना करता हूं कि वह़ मजबूनी के साथ इस फैमले पर जो प्रधान मन्त्री ने हरियाएा प्रोर पंजाब के बारे में दिया है, श्रमल करायें और जल्दी जल्दी फाजिलका ग्रौर ग्रतोहर हृम लोगों को दिला दें। व्रहां के लोगों पर बहुत ज्याढा श्रत्याचार श्रकाली गवर्नमेंट ने किए हैं। घंज पंजाब के श्रः दर स्रीतेली मा जंसा सलूक उस इलाके के साथ fिया जा रहा है। उनको पानी नहीं दिया जा रह्रा है। उनके सारे डिवलेपमेंट वर्स को बन्द कर दिया गया है। वहॉं के लोग ग्राज यतीमों के तौर पर रह रहे हैं। इन इलाकों को हरियाएया को जल्दी से जल्दी ट्रांसफर किया जाना चाहिए तानि उन लोगों के गुजारे का और निर्वाह का प्रव्न्व हरियाएा। कर सके।

अकाली गवर्नमेंट जँसे गिरी श्रौर जिन हालत में fिरी ग्रौर जो एकशन वहां के गवर्नर ने लिया, उसके लिए मैं उनकी सराहना करता हूं। वहां पर उस वक्त रातरंज की चालें चली

जा रही थीं। उस वक्त ही नहीं बहुत पहले से चली जाती रही हैं। अ्रष्टाचार की बहुत—बात की जाती है । डिफैकरांज की भी बहुत बात की जाती है। में जानना चाहता हूं कि लछ्छमन fसह गिल को डिफँवट करवाने वाला कौन था ग्रौर उनकी सरकार को समर्थन देने वाला क.रन थी ? क्या वह सरकार भ्रषटाचारी सरकार नहीं थी ? यद्र ठीक है कि बादल की गवनंमेंट भ्रष्टाचारी गवर्नमैंट थी । ग्रापस में भी वे लोग इल्जाम लगाते रहते थे। लेकिन में पूछना चाहता हूं कि यह भ्रष्टाचार की बवा, यह भ्रष्टचार की बीमारी कहां से शुरू हुई ? सरदार दरबारा सिह जब पंजाब के होम मिनिस्टर थे तब मैं भी वहां असेग्बली का मेम्वर था। वह पंजाब के हालात से बड़ी श्रचद्धी तरह वाकिफ हैं। मैं उन से पूछना चाहता हूं कि दास कमिशन ने क्या फैसला दिया था ग्रापके चीफ fिनिस्टर के खिलाफ श्री प्रताप सिंह कंरों के खिलाफ ? क्या वह कांग्रेस पार्टी में नहीं थे ? क्या वह ग्रापके चीफ मिनिस्टर नहीं थे ? बख्री गुल म मुहम्मद जब वह जम्नू करमीर के चीफ मिनिम्टर थे श्रोर जब उनके खिलएफ कमिशन बैठा तो उसने क्या फँसला दिया ? क्या तव वह श्रापके चीफ मिनिस्टर नहीं ये ? क्या यह अापके द्वारा चलाई गई बीमारी नहीं है ? राम कृष्या गवर्नमैंट: जब पंज़ाब में थी तब क्या कुछ नहीं हुग्रा । लछ्छमन सिह गिल को ग्रकालियों में से निकाल कर, वृद्वां से उनको डिमैक्ट करवा कर चीफ मिनिस्टर बनाया ग्रोर उनका साथ आवने दिया। वह् गवर्नमैंट कितनी भ्रष्टाचारी थी इसको श्राप जानते हैं। लंकिन उसके साथ श्राप थे । उसको झ्रापने इमदाद दी थी। समभ में नहीं आता है कि ग्राप आज किस मुंह से भ्रष्टाचार की बात कर सकते हैं, किस तरह से इलजाम लगा सकते हैं। मैं झ्रकालियों को डिफेंड करने के लिए यहाँ खड़ा नहीं हुग्रा हूं, उनकी डिफेंस काउंसिल के तौर पर खड़ा नहीं हुप्रा हूं 1

यहां कहा गय। है कि डिफैकशांज करवान.
[श्री मुल्तियार सिह] चाहते तो हम मंसूर में ग्रौर गुजरात में करवा सकते थे ग्रोर ग्रपनी सरकार बना सकते थे। परसों बोलते हुये यहां कहा गया कि हम डिफैक्रांज में यकीन नहीं करते हैं। यह कहा गया कि दितेन्द्र देसाई की सरकार जब गुजरात में खत्म हुई तो हम वहां पर गवनंमेंट बना सकते थे लेकिन हपने नहीं बनाई इस वास्ते कि हम डिफेकरांज को बढ़वा नहीं देना चहते थे । बीरेन्द्र पाटिल की सरकार जब मंसूर में खत्म हुई उस वक्त भी हमने गवर्नैमैंट नही बनाई श्रोर झ्रगर हैम चाहते तो बना सकते थें। वह फ.ाजिल दोर्त इस वक्त यहां पर नहीं हैं जो यह कह रहे थे। श्री दरबारा सिंह कांग्रेस पार्टी के डिट्टी लीडर हैं। मैं उनसे पूछना चाहृता हूँ कि उत्तर प्रदेश के श्रन्दर आपने क्या कि.या ? क्या वहां डिफँभटर्ज के साथ मिलकर श्रापने सरकार नहीं बनाई ? विद्धार में नहीं बनाई ? समभ में नही श्राता कैसे इस तरह की बात कह दी जाती है। आप तो डिफंकरांज कराने व.लों के चैम्पियन हैं। श्रापको ऐसा कराये वगंर चैन नहीं पड़ सकता है। गुजरात श्रेर मैसूर में ग्रापने ऐसा नहीं किया, इसका श्रेय भाप लूटना चाहते हैं।

ख़द ही मुरीविर, खुद ही कातिल, खुद ही मुंसिफ ठहरें।

> श्रकरबा मेरे करें सून का दावा किस पर ।

डिफेकरान कराने वाले श्राज दूसरों को इसका दोव देते हैं। ये पंजाब के गवर्नर को कोसते हैं, श्री पावटे को कोसते हैं कि उन्होंने इनकी सरकार क्यों नहीं बनाने दी। गुरनाम सिह को डिफेंच्ट कर्वा कर श्रोर उनके साध 18 अ्रादमियों निक ल कर कांग्रेस पार्टी ने फिर यहा खेल खेलना चाहा था-

एक माननीय सवस्य : भ्रपनी निगह्बान में मंह डाल कर देखिए।

बी मुल्सियार सिहृ मलिक : जन संघ ने जय उनका साथ कोड़े दिया तब भापने उनका

साथ दिया। उनको समर्थन दिया। ग्रव उसी भ्रकाली सरकार को श्राप भ्रष्टाचारी कहते हैं। उसको किसने एर्टैब.लिश रहने में मदद दी। जब जन संघ बाहर ग्राया तो ग्राप बयान देते रहे कि अकाली गवर्न मेंट का हम साथ देंगे। श्रब आप दूसरों को एक्यूज करते हैं। दया यह उचित है ?

यहां इनववायरी कमिशन की मांग की गई है। समभ में नहीं ग्राता कि राष्ट्रपति राज में पापुलर गघन्नमैंट के वजीरों के खिलाफ किस तरह से इनववायरी हो सकती है। ऐसा इस वक्त कराना शोभा नहीं देता है। यह् वैड प्रंसीडेंट होगा। जब वहां पापुलर गवर्नैमैंट श्रा जाए ग्रोर समभं कि भ्रष्टाचार व्याप्त था तो वह उनके स्खिलाफ बेशक इनववायरी कराये। श्रापके लोग पंजाब के श्रन्दर जो भ्रष्टाचार करते रहे हैं उसका क्या होगा। वह भी तो हो। फिर ग्र पकी भी मांग है श्रौर ग्राप भी झ्रपोज नहीं करते हैं इसको। लेकिन में कहता हूं कि राष्ट्रपति राज के ग्रंदर नहीं बत्किक जब पाुुलर गवनंमैंट आ जाए तो वह इनववायरी कमिशन इंस्टीट्यूट करे ग्रौर इन सारी चीजों के श्रंदर जाये ।

एक अंनिम बात में कहना चाहता हूं। सेंटर के वहां पर कम्मचारी हैं पंजाब में । उनको भी जो सहूलियतें सेन्ट्रल गवनंमैंट सवेन्ट्स को मिलती हैं, अब जब कि वहां राष्ट्रपति राज लागू है मिलनी चाहिए। जो कनसलटेटिव कमेटी बनी है, उसका शायद मैं भी मेन्चर हूं। इस चीज को हम वहां भी उठायेगे ग्रोर वहां भी सुभाव इसके बारे में देंगे । मैं श्री पन्त से गुजारिश करना चाहता हूं कि पंजाब में जो सेन्ट्रल गवर्ममेंट के एम्पलाईज हैं, उनको भी वही एमिनिटीज श्रोर फैसिलिटीज दी जायें, जोकि यहां के सेन्ट्रल गवर्नमेंट एम्पलाईज को दी जाती हैं।

SHRI DEVINDER SINGH GARCHA (Ludhiana): Most of the things which were worth saying. . .

भी हुकम चन्द कछवाय(मुरेना) : सभापति महोदय मेरा व्यवस्था का प्रशन है। सदन में गरापूरित नहीं है।

MR. CHAIRMAN : There is no quorum. The hon. Member may resume his seat for a while. The bell is being rung -

Now, there is quorum. The hon. Member may resume his speech cow.

SHRI DEVINDRA SINGH GARCHA : A good many things that were worth saying have already been mentioned in this House by the hon. Members who spoke before me. I would seek the indulgence of the House if I happen to repeat a couple of
them.

A good deal has been said about the corruption that was practised by the Akali regime of which we got rid only a few weeks back. But my fear is that a thorough understanding of the state that prevailed is not there with us at the moment.

The Akali Dal during its regime had institutionalised corruption. It was accepted as an ordinary measure of Statecraft for a Minister to be corrupt. A very interesting anecdote is going the rounds in Punjab that an Akali Minister charged Rs. 5000 from a colleague of his, a fellow-Minister for showing him a favour. For all that, I know that it is true also. It is not a bad joke, but an absolute fact Even the transfers of the Government officials were made an instruments for collecting funds. Very naturally, it gives a right to the Government official who seeks a transfer and who gets the transfer after paying money to the good old Minister, when he goes to the district head office, to be corrupt himself to whatever extent he chooses.

It has been mentioned that the Ministry headed by the late Sardar Lachmain Singh was corrupt. That is also true. It was corrupt. But the kind of corruption that he had indulged in simple recedes into the Shadows when you compare it with the kind of corruption that was prevalent under Sardar Badal and before that under Sardar Gurnam Singh.

It is all right for any member to get up and say that our Party, the Congress Party, was supporing Sardar Lachman Singh while he was Chief Minister. Again it is a fuct.

But although we had extended some support to Sardar Lachman Singh with the hope that under him things would he a little different from the previous Akali regime, ours was a critical supnort and as soon as we discovered that he was also incorrigible corrupt, we wit'drew our support, and that Ministry was got rid of, and everybody in this House sighed a sigh of relief except a couple of members who habitually wanted to say something against the Congress Party.

Ch. Muktiar Singh appears to have participated in this debate not because he anything substantial to say about Punjab but because he wanted to plead the case of Haryana for Fazilka and Abohar areas.

You will remember that when this award was announced as a result of which Chandigarh went to Punjab and Fazilka and Abohar to Haryana, a cood many trains were burnt in Haryana. The Haryansvis were very unhappy at the fact that Abohar and Fazilka were handed over to them. Even a Congress worker was brunt alive in his own shop by the Jan Sangh fellows (Interruptions).

श्री हुकम चन्द कछनाय : बिल्कुल गलत बात है। (ठयवधान) उस की जांच करवाई जाये। सभापति महोदय, इस को रिकार्ड से निकाल दिया जाये । यह सत्व से परे बात कर रहे हैं। यह सब इन का काम है। (ठ्यघधान) यह़ तो इस के विशेषज्ञ हैं । इन्होंने सारे देश में कितने ही दंगे करवाये हैं।

श्रो शाशि भूषरा (दक्षिएा दिल्ली) : यह इन लोगों का पेशा है। फ्रक्तिकुमार को fंजदा जला $f$, या गया था। (द्यवधान)

की राम रतन शार्मा (बँँदा) : सभापति महोदय, मेरी प्रार्थना है कि इस को रिकार्ड से निकाल दिया जागे । (वप्पवधान)

शी दृ़म चन्व कछताय : इस को रिकां्र से निकाल दिया जाये। (व्यवधनन)

MR. CHAIRMAN : Order, order. SHRI HUKAM CHAND KACHWAI :

[^1]MR CHAIRMAN : I hava not permit'ed him. Nothing that he said will go on record. The hon. Member may continue.

## SHRI DEVINDER SINGH GARCHA :

 Haryana went through three day's of herrendous agitation over this. When it was proposed by the Centre that Fazilka and Abohar be handed over to Haryana, it was impossible for a Punjabi to pass through Haryana and remain in the good health. But today it appears the Harvanvis under the leadership of Ct . Muktiar Singh have changed their mind and insist upon taking Abohar and Fazilka from us. The Akali Government accepted this award simply because they wanted to save the life of their leader-one political party vanted to save the life of its leader. Therefore, it accepted this proposal and agreed to part with Fazilka and Abohar. But the people of Punjah certainly are not hound by the dictare of this single communal party. The peonle of Punjab unanimously decided, our own Party has unanimously decided, not to part with Fazilka and Abohar. The Choudhury derided the fact that our partv had passed a resolution to the effect that the people of Punjab are not going to part with Fazilka and Abohar. I take pride in this. We passed this resolution and we are not going to part with Fazilka and Ahohar. The city of Chandigarh has never personally enamoured me very much. It is a beautifui city, but the like of the city can be created at any time. Abohar and Fazilka are Punjabi areas: they are our people, Punjabispeaking people, and we will never part company with them.The thing that next came to the mind of Shri Muktiar Singh Malik was this He apolngetically, of course. pleaded that no commission of enquiry should be established right now, even though serious charges of corruption have been levelled against the erstwhile Ministry. He does not say and it is impossible to say when charges of corruption are authentically levied particularly when people are willing to take responsihility for them that the commission should not be instituted. The anology that can be there is that there shuuld be a nostponement. Let there be a ponular Minis'ry and only then they should consti'ute a commission Our demand is that a Presidential commission should be constituted. How does it mater whether there is a porular Ministry at the moment or not? Do I
understand that Shri Muktiar Singh Ma ik wants to give another chance to the Akali Dai? May be they will come back to power and decide not to hold an enquiry against themselves ?

But this Jan Sangh role is not new Punjab. In Punjab, the Jan Sangh just has to be an appendage of the Akali Dal. (Interruption) Over there, because of the lack of faith of the population in the Jan Sangh, ideology, the Jan Sangh has to play a. opportunistic role. I am not saying that in other parts of the country the Jan Sangh is not nlaying exactly the same role, but in Punjab particularly the Jan Singh is finally committed to be an opportunistic appendage of the Akali Dal. The apology that is put up for the Akali Dal can, therefore, be very easily understood by a humble Punjabi like me. It lies on the Jan Sangh squarely to support the Akali Dal whenever it can.

MR. CHAIRMAN : Please conclude.

SHRI DEVINDER SINGH GARCHA : I want just wo more minutes. I want to voice a couple of needs of Punjab. It was a matter of joy and hope for thie renple of Punjab that we get rid of this Ministry, but this joy an 1 hope would really be short lived unless we take certain stern and spee.Jy measures to ameliorate some of the grievances of our people. For eximple, lind reform is a very burning question for the whole country and it is a burning question for Punjab also There is much talk about the green revolution that is taking pluce in the country and especially in Punjab. Its benefits have not reached the small faymer as yet. The benefis of iechnology to the small farmer and the marginal farmer are not availab'e. The Centra! Government tas decided to set un a special agency fir the small and marginal farmers. We welcome this step, but expect that the existing machinery in the Siate will wurk out that scheme would be fruitful. You have to create a new and I will use that much-hackneyed word and firmly committed machinery to bring the bencfits of technology to the small farmer.

The true heart-ache of all the Punja' is at the monent is the power situation into State. There is a very grave shortige of power in our State. Our industries are nut running theit normal shifts,

Agriculture is not getting the amonnt of electricity that it should, and our grievance is that whatever proposal is put forth for the generation of electricity has been held up on the pretext of a dispute either with Himachal Pradesh or Jammu and Kashmir.

AN HON. MEMBER : There is no dispute with Himacha! Pradesh.

## SHRI DEVINDER SINGH GARCHA :

 I have a letter here that was received by the Governor of Puniab from Dr. K. L. Rao, which says :'Concurrence of the Himachal Pradesh and Jammu and Kashmir Governments regarding submergence of land. .." etc, etc.
So long as power generation is kept as a State subject, I belive this kind of dispute will always be there. this is not an issue that any particular State can be allowed to meddle with. Let us take a firm decision that the generation of power is of national concern and it should be taken up by the Centre. Merely because Himachal Pradesh or U. P. or Jammu and Kashmir is plessed with a few mountains where dams can be built, it does not mean that the resources of the nation become their monopoly. That way, Bihar can say that they will not send Out any steel and Punjab can say that they will not send out any grain. We are one country and we should learn to be proud of it. Therefure, I suggest that the Centre should take up the responsibility of hydroelectric generation in the country just as it has taken $u_{1}$, the generation of atomic power. Only then the needs of the States which are deficit in power can be mer.

There are two major rivers flcwing in Punjab, the Sutlej and the Beas, and I would like to daw the attention of the hon. Minister particularly to this problem which is of imnedia'c concern to everybody. In the low-lying areas around these rivers landless labourers had cultiva'ed large tracts of land, two to five acres each never more than five acres. The Akali Government made a very conceried effort with the collusion of the officials of the Rehabilitation Department, to oust these people who had tilled this land through their own labour. $\mathrm{N}_{0}$ facilities were provided by the Government. It was sheer manual labour through Which they brought these lands under the
plough. Unfortunately, some of the peopl ${ }^{\text {e }}$ who are carrying zidiculous documents or chits issued by the Rehabilitation Department are even now going to these villages and trying to displace these cultivators. Immediate steps should be taken to see that no new allotments are made, and if any allotments have been made during the last six months or so, they should be cancelled. These people who, by sheer dint of their courage and hard labour, have cultivated these lands should remain in possession and if any revenue is to be charged by the Revenle or Rahabititation Department, let it be charged from these people and nobody else.
*SHRI M. SATYANARAYANA RAO (Karim Nagar): Mr. Chairman, Sir this is the fourth State where President's Rule has been imposed and this House has been called upon to confer on the President the legislative powers of the State Legislature,; I hope this would be last in the series. I am of the opinton that it is not proper or just to go on bringing State after State under Presidents Rule. While you talk loud on the democratic fabric of our polity, you are bringing State after State under President's Rule often. I submit that this state of affairs tarnished the image of our country abroad.

Sir, it is also unfortunate that the discussion on the Bill before us has gone at a tangent with Members trading accusations against parties running the erstwhile Government in Punjab.

It is a well-known fact that Punjab occupies a high place not oaly in the ficld of agricultural developmett but in the i: dustrial sphare also. I wish this State bec omes a model State for other States in the country. The Punjabis are a hardworking and enterprising people. Unlike people in oihur States, they devote their tine and energy for the economic development of of their people and their State. The responsibility for further development of such a State has now devolved on the Centre with the imposition of the President's Rule there.

I will not enter into any controversy over the propriety of otherwise of the Governor's action in regard to not calling upon orher Parties to form the Government there or secking the imposition of President's Rule there. Many Hon'ble Members

[^2][Shri M. Satyanarayan]
have dealt upon this aspect The Governor might have had this own doubts about the majority of a particular Party or group of Parties or about the stability of a Government formed by such a Party or group of Parties. But still I maintain that this is not conducive to a healthy growth of democratic traditions and conventions in our country.

This does not pertain to Punjab only. Such things have hapdened in others States also. And while we are discussing Punjab 1 feel it will not be irrelevant if we consider these aspects generally in regard to what happened or what is likely to happen in other States. It is not appropriate for the Governor to have recommended imposition of President's Rule in the State without exploring the possibility of formation of an alterıative Government.

In the case of Punjab, you have taken a stand that the Governor was not within his power or rights to ask for the imposition of President's Rule. But in the case of other States, you take a different stand. What then happens to your sense of fairp'ay, justice and impartiality? In priaciple I am opposed to this. The Governor should fiist of all explore the posibility of an alternative Government. He should not arrogate to himself the right which legitimately belongs to the Legislature. Only after exhausting all possibilities can he seek imposition of President's Rule in the State.

I know that there was rampant corruptio. in the ranks of the Government in Punjab. I also know that they were interested in enriching themselves at the cost of the common man. We have bcen reading in the newspapers about the cases of favouritism, nepotism practised by the Akali Dal Ministry there.

So what I would like to tell the Centre is that they have now the opportunity to clean these Augean stables. Only yesterday this House passed the Constitution Amendment Bill. It is not for fun that this House gave its support and endorsement to this Bill. Such a redical measure has been taken for the better and sustained development of the States and for the bettering of the lot of the underiog.

Hitherto the Centre has been pleading that certain subjects like land reiorms are in the State list, and that they could only advise the state Governments. Now that Punjub has directly come under their con-
trol, here is their opnortunity to translate their promises into reality. If you implement the land reforms in Punjab while it is under your control, these reforms can be a model for other States to follow.

I oppose the Bill under consideration which seeks to confer on the President the powers of the State Legislature to make laws. In reality the powers are not exercised by the President because he cannot act on his own. The de facto authority. is the Hcme Minister while the President is only a de jure authority. Normally when a State comes under President's Rule, there is to be a Consultative Committee of Members of Parliament to aid and advise the President in the discharge of his delegated duties. But so far no such committee has been constituted in respect of Punjıb. When the legislative powers are delegated to the President, the Parliament is denied the opportunity of discussing the affairs of the State. It should not be so.

However, I would urge the Home Minister to take advantage of this opportunity and implement the various redical measures like land reforms for the advancement of the State and Punjab.

SHRI A. N. VIDYALANKAR (Chandigarh) : Mr. Chairman, Sir,...

श्री हैकम चन्न कछतायाय : सभापति महोदग, सदन में गरापूर्ति नहीं है ।

MR. CHAIRMAN: The hon. Member may resume his seat. The quorum is being challenged. The bell is being rung......NJw. there is quorum. He may continue his speech.

SHRI A. N. VIDYALANKAR : Mr. Chairman the hon. Member who spoke in Tamil in this House has said that the Central Government have removed the Akali Ministry and that they should not have removed that Ministry. Perhaps, he is not familiar with the situation obtaining in Punjab. The real position is that the Akali party broke under the weight of its own misdeeds and, therefore, the Akali Party could not carry on the administration and the Chief Minister resigned. When the Governor saw that no other stable Ministry was possible, then only be recommended

Presidential rule. Since my hon. friend did not belong to Punjab he did not k.low the conditions of Punjab and that is why he said that the Centre removed that
Ministry.

In Punjab the Akali Party and the Jan Sang have been creating a vicious atmosphere of communalism. Both the parties united in order to remove Congress from power and they continced to create that kind of atmosphere. This has been the misfortune of Punjab. It is a stranger phenomenon that after the Jan Sangh were defeated in the polls they have adopted a strange attitude. They do not come forward openly but they try to oppose all the good measures in an indirectd way, not a direct way. Shri Malik opposed the appointment of a committee of inquiry, not directly but indirectly by saying, let it be postponed until a popular Ministry comes to power. Some friends from this side have referred to the inquiry which was instituted against Sardar Pratap Sing Kairon. It was the Congress Party which instituted the inquiry and forced the exit of his Ministry. But in the case of the Akali Party, even though Sant Fateh Singh promised so many times that he will institute inquiry, even though ex-Chief Minister Shri Badal promised before his own party that he will institute inquiry against the erring Ministers, no inquiry was instituted so far. Why ? Because, they were all partners or copartners in that exploitation and loot of Punjab. It is only when the thieves quarrel that the truth comes out. Now they are fighting shy because they are afraid that the truth will come out. The Jan Sangh members say that the inquiry should be postponed because there is no popular Ministry. This is a conspiracy. I say that these communal parties, reactionary parties, they all co-operate with each other and support each oiher.

As I said, Jan Sangh does not come to the forefront. It does things indirectly. Even yesterday when we were discussing the Constitution (Amendment) Bill, Shri Vajpayee tried to attack the amendment indirectly; he did not do that directly.

[^3]reform. So, we have to discharge this responsibility.

I thought and when I met the Governor I told him we should start with a clean slate. But I am sorry to say that we have not started with a clean slate. For instance, there were the Government employees. They were victimised Tiventy thousand teachers were transferred simultaneously. This is a strange phenomenon. The Governor said that he was also surprised but not free because he was a constitutional Governor and could not oppose the Ministry. It is good that we have decided now that those transfers should be cancelled. The victimisation of employees was there. That victimisation should he vacated. The Government employees had certain demands. For instance, one of their demand was that their Union should be recognised but that has not been done. Now the Ministry should recognise that Union. They have asked for interim relief. This may be sympathetically examined. The cases against their leaders should be withdrawn when there is compromise. The Akali Government have instituted cases under such sections showing violence was involved in it so that the same might not be withdrawn. Government should see into all such cases and have them withdrawn. I am quite sure the Centre will give Punjab a very clean Government, an efficient Government and really what Punjab desire. I can see now the Punjabis have known because these communal partics-Jan Sangh Party and Akali-have been amply exposed. Now, people understand their policies. The people are now in a very good mood and they deserve a clean and efficient Goveınment. I hope also that some way will be found to remove the grievances of Government employees. I can say if a proper way is found add a clean Government is given this communalism of Jan Sangh and Akalis will end for ever and will never revive.

शी महेंच्र्र सिह निल (फिगेजपुर) : मान्यसर, प्राज फंजा के बारें गे वहां बहत हो रही है। समभंक में नहीं प्राता कि प्ताब मे निफें एक दुटस भाया है प्रकाली, बह तो बोल नहीं सकता, न हाउस में श्राता है, लेकिन उन्होंने वकील किये हुये हैं। एक हमारे साली श्री गोडर बोले, जो कि मद्रास से आते हैं, जिनको
[श्री महेन्द्र सिह गिल] पंजाब के बारे में कुछ मालूम नहीं है, श्रोर दूँसरे चोधरी मुख्तियार मिंह श्रकाली पार्टी की मदद के लिए यहां बोले हैं।

यह वह पंजाब है जो छलागें लंगातां हुग्रां हिन्दुम्तान में मबसे श्रागे जा रहा था डेवलंपमेंट में। लेकिन वहां दो ऐसी फिरकापर्स्त पर्टियं श्रायंं, एक श्रकाली भ्रीर दूसरे जनसंघ, जिन्होंने पंजाब का सत्यानाश कर दिया। जैसे किसी गांव में चोर श्रोर कुत्ती रल जाये तो गांव बरबाद हो जाता है, वंसे ही पंजाब में हुश्रा। 1967 के चुनाव के बाद पंजाब में दो फिरकापरस्त पर्fटयां श्रायीं जो हिन्दू श्रोर सिख को लड़ाना चएहती थीं, जो पंजाब का बेड़ा गर्क करना चाहती थीं। माननीय मुख्तियार मिंह भूल गये हममने कहा था जनसंघ ग्रकालियों से ग्रलग हो ? इनकी ग्रकालियों से बन नहीं पाई, यह दोनों ग्रापस में लड़े जो कि हमारे सामने है। पंजाब में 1967 के बाद जनसंघ श्रोर ग्रकालियों का जो गठबन्घन हुग्रा वह पंजाब के लिये दुर्भाग्य की बात थी। आप को याद होगा कि पंजाब में पानीपत में महान देशभक्त कांति कुमार को इन जनसंघिगों ने जिन्दा जलाया $1 .$. (ठयवधान)

श्री हुकम चन्व कघ्ववाय : इस पर जांच हुई है और तथ्य सामने ग्राये हैं। इसलिये किसी दूस पर भूँठा इल्जाम लगाना बेकार है। माननीय सदस्य की बात्त गलत है ।

SHRI MUKHTIAR SINGH MALIK : It is uncalled for.

MR. CHAIRMAN : The hon. Member has made a statement. It has been repudiated. Both the statements are on the record and it will be for the public to judge.

धी वन्ना साल बारुपाल (गंगानगर) : पंजाब को अ्रकाली श्रौर जनसंघ पारियों ने बरबाद कर दिया। छुन्हुोने पंजाष को घोड़े से रगोषा बना दिया।

श्री महेन्द्र निस निल : चोधरी मुख्तियार लिंह ने कहां कि कांग्रेस वालों ने श्रकालियों से डिफेक्शान कराया है पंजाब में। हमने क़ब कहा था कि जनसंघ और श्रकली मिल कर गज्य करें, ग्रैरे हमने कब कहा था कि घ्रलग हो जाग्रो। जब चंार श्रोर कुत्ती रल नहीं सके तो श्रपने आप अलग हो गये, ग्रोर पंजाब का हाल ग्रापके सामने है ।

1967 के बाद चार दफा वहां राज़्य बदला क्योंकि फिरकापरस्त श्रादमी लंगों का सिर फुड़वाते थे । ग्रोर पंजाब में चार बार डिफेकशान्स हुये हैं, ग्रोर जो बदले वे बड़े-बड़े बिजनेसमैन ग्रौर इंडस्ट्रियलिस्ट्स थे। में कहना चाहूंगा कि इस हाजस में कि डिफेवरान के बारे में पार्लियमेंट में सरकार कों कोई कानून लाना चाहिये ताकि जो डिफेक्ट करे उसकी मेम्बरी. चली जाय ।

पंजाब में एक नया फिरकापरस्त संत फतेह सिह उठ रहा है। ग्राज देश में बंगला देश की वजह से एक गन्भीर समस्या पैदा हो गई है, सारा देश उस समस्या की ग्रोर देख रहा है, ऐसे समय में यह संत फतेह सिंह कहां से क्रा गया। सिख कौम ह्मेशा देशभक्त रही है। जब भी भार्त पर कोई खतरा भ्राया सिख कौम सबसे आगे रही है। श्रापको याद होगा सिखों ने हिन्दुम्तान की श्राजादी के लिये हमेशा कुरबंनियां दी हैं।

### 14.59 hrs.

## [Mr. Deputy Speaker in the Chair]

लेकिन सन्त फतेह सिह ने 1965 में जो मरा ब्रत रक्खा वह अ्रकाल तख्त पर रक्खा जब हम हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की लड़ाई लड़ रहे ये, यह श्रापको याद होगा । वह फिकापरस्त लोग जनसंध वालों के ही भाई हैं। जिस वक्त श्रमृतसर में उन्होंने श्रपना मरसा क्रत शुरू कर दिया श्रौर श्रमिन्न कुण्ड बना लिया, वह 1965 का हिस्टारिकल दिन थ। जिस वक्त

हम पाकिर्तान के साथ लड़ रहे थे उस वक्त संत फतेह मिंह ने गद्दारी की हिन्दुस्तान से पंजाबी स्वि के मसले को उठा कर। ग्रापको यह भी याद होगा कि जिस वक़् राष्ट्रपति ने उनसे अ्रपील की उस के बाद उन्होंने उसको छोड़ा। ग्राज फिर हिन्दुर्तान के ऐसे हालात हैं जबकि मुल्क को खतरा है ग्रौर ग्राज फिर संत फ़तेह सिंह एक मोर्चा लिए फिरते. हैं।

15 hrs.
इस वक्त मोर्चा किस लिए है ? जब सीसगंज गुछद्वारा बन्द हो रहा था ग्रोर सिख सिख का भगड़ा था, उस वक्त संत फतेह सिह कहां गया था ? वह सोया हुग्रा था। उस वक्त उस को दिल्ली में आना चाहिये था। वह मौका था दिल्ली में ग्राने का ग्रौर भाई-भाई को लड़ने से रोकने ग्रौर बचाने का। लेकिन ः ।ज तो हिन्दुस्तान की सरकार ने भाई-भाई के सिर को फूटने से बचाया है, ग्रोर जa आज गुरुद्धारे पर मत्था टेकने, दर्शान करने के लिए लोग जा रहे हैं तो संत फतेह सिंह ग्रा रहा है। सिर्फ इस लिये कि जत्थेदार सन्तोख fिंह का गोलक बंद हो रहा है, जो कड़ाह ज़साद वह श्रपने लोगों को चखाता था वह उससे छीन लिया गया भ्रोर सारा पैसा कमेटी के हाथ में श्रा गया है । qाब में उसका जो हस्त हो रहा है वह ग्रापको मालूँ है । जहां भी संत फतेह सिंह गया ग्रीर ऽलहां का रहा है, लोग गालियों से उसका ख्वागत कर रहे हैं। मेरा श्रंदाजा है कि झ्भगर गवर्नर रोज उसकी मदद न करे, हिफाजत न करे तो संत फतेह सिंह दिल्ली नहीं श्रा सकेगा। लोग रास्ते में ही उसको रोक लेंगे, दिल्ली के लिए चलने नहीं देंगे।

असल में मसला यह़ है कि जब भी हिन्दुस्तान में कोई ऐसा मोका ग्राया जो नाजुक था तब संत फ्तेह् fिंह हमेशा गद्दारी करते रहे हैं। श्रापको याद होगा कि जब पंजाब में सरदार गुरनाम सिंद्ह चीफ मिनिस्टर थे तब उन्होंने क्या किया। दिंनुद्तान के लिये यो बड़े अह्म

दिन हैं। एक तो 26 जनवरी अ्रौर दूसरा 15 भ्रगस्त। यह हिन्दुस्तान के लिये बड़े महान् दिन हैं । : 6 जनवरी को संत फतेह सिंह की सरकार : ग्रोर सरदार गुरनाम लिंह ने पंजाब में कहीं भी नेग़नल फ्लैग नहीं उड़ने दिया, बल्कि काले भंडों से वह दिन मनाया। हमें श्री पन्त से कहना है कि उनको एन्ववायरी कंरानी चाहिये और जो लोग हिन्दुस्तान में इस तरह से गद्दारी करते हैं. उनको सजा देनी चाहिये। मैं एक श्रोर उदाहराा देना चाहता हूं । संत फतेह मिंह के श्रकाली दल के जनरल सेकेट्री डा० जगजीत सिंह, जो पहले fिनिस्टर थे, फारेन द्वर पर गये हुये हैं ग्रैर मेरी इत्तला है कि वह मुसलिम कंट्रोज में घूम रहे हैं। ग्राप को इसकी इनक्वायरी करवानी चाहिये श्रोर उनको वापस बुलाना चाहिए व उनके पासपोर्ट को कंसेल करना चाहिये।

यह तो संत फतेह fंमंह की बात थी। श्रब ग्राप पंजाब की बात देखिये। यह बात हमारे मित्र श्री कपूर ने ठीक कही कि सेंट्रल गवर्नमेंट ने पंजाब गवर्नमेंट को 16 इंडस्ट्रियल लाइसेस दिये, लेकिन प्रकाश fिंह बादल सौदा करता रहा, किसी से दस लाख मांगता रहा, किसी से पन्द्रह लाख मांगता रहा श्रौर किसी से बीस लाख मांगता रहा । नतीजा यह हुम्रा कि पंजाब में इंडस्ट्रीज नहीं शुरू हो स₹ं। । श्राज में भी कहूंगा कि हेवी इणउस्ट्रीज पंजाब में जरूर लगाई जायें क्योंकि हेवी हण्ड्ट्रीज होने से पंजाब का डेवलपमेंट होगा श्रोर पंजाब श्रागे बढ़ता चला जायेगा।

थीन डैम का मसला बहुत दिनों से पड़ा हुग्रा है। मिं श्रापंके जरिये से बिनती कहूंगा कि थीन डैम का जो मसला है वह पंजाब के लिये हल कर देना चाहिंे। इससे न सिकं पंजाव को गाहत निलेगी बल्कि इससे सारे हिन्दुख्तान को मदद मिलेगी। यह सारे हिन्दुस्तान को अनाज पहुंचयेगा ।

एक भ्रीर बात श्रापकी नोटिस में लाना
[श्री महेन्द्र सिह गिल] चाहता हूं। हमारा सरहद्दी इलाका है। मेरी जो कांरिटटुएन्सी है वह फीरोजपुर है, उसी तरह से श्रमृतसर का ड़लाका है। वहां पर ह्मारे हजारों लोग लाहीर का टेलिविजन काम को देखते हैं। इससे जो हमारा दुरमन मुल्क है उस पाकिस्तान का प्रचार होता है। में हिन्दुस्तान की सरकार से कहूंगा कि जलंधर रेडियो के साथ सरदृद्द के नजदीक कोई टेलिविजन संटर बनाया जाय ताकि हमारे देरा का प्रचार हो सके ।

पंजाब में ग्रकाली सरकार ने मुलाजमीन को, टीचरों को श्रौर नौजबानों को बहुत तंग किया था। ग्रब उसमें कुछ राहत मिलने लगी है। लेकिन पंजाब के मुलाजिमों का जो इटेरिम रिलीफ का मसला है उसको जल्दी से जल्दी हल किया जाना चाहिये। जब हिन्दुस्तान के बहुत से सूबों में इंटेरिम रिलीफ का मसला हल हो गया है तब पंजाब में भी हो जाना चाहिये।

चण्डीगढ़, जो हमारी राजधानी है, उसको मेन लाइन पर ला कर दिल्ली से जोड़ा जाना चाहिये ताकि चण्डीगढ़ में बड़ा स्टेशान बन सके श्रोर वह पंजाब के लिए एक शान हो सके ।

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): What has happened in the Punjah is very interesting which the Members of this House should know. In Punjab the big landlords and capitalists kept two types of turbans in the House, one tlue and one white. When the Akalis come to power, they wear the blue one and when the Congress came into power, they wear the white one. Old wine in the new bottle.

Sir, we do not hold any brief for the Akalies. They are as bad as the Congress. What did the Congress do? What the Akalis did not do, we have heard a narration of it. We agree they did not do because they are a party of landlords, big capitalists and their stocges. But what did the Congress do in their long reigm? What agrarian reforms did they bring? They adopted the gimmick of some constitutional
amendment for which there was no need some years ago and they brought it with an eye on the elections and to get some votes from the people who do not understand things. You kept the people in a backward State and you can sell anything to them and get the best advantage out of $i t$.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, AND SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI RAJ BAHADUR) : You should not insult the people.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : 1 am very respectful to all of you. You have kept the people in a backward State. Sir, the percentage of literacy is below even that of Mexico. You have kept them completely ignorant. You want me to swallow that pill from you.

SHRI RAJ BAHADUR : There if no justification to insult the people.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : You have not even fulfilled the minimum commitment enshrined in the Constitution even after twenty years.

Mr. Deputy Speaker, I now come back to the subject under discussion. Let us see the character of socialism in Akalis and the Congressmen in Punjab. Who are the leaders there in the Assembly Major Harinder Singh is the leader of the Congress Party in the Assembly. Is he not one of the biggest landlords; the Punjab? I want Mr. Darbara Singht to dispute me. Similarly, the leader of the Akali Party also is a big landlord in the Assembly. Therefore, Sir, we are only mincing the meat which does not exist. Land reforms have made no dent in the Punjab, They have been allowing big holdings, big farms and land-holdings even upto 2000 and 3000 acres to single individuals or families or phoney co-operatives confined to members of a family only and thousands of well-irrigated acres of land are held by big land-owners as horticu:tural farms by putting a coup'c of fruit orchards. You had been doing the same thing. Thicn, why blame the Akalis alone? Both are equally guilty. Our hon. Speaker was an MLA there during the Congress rule. He
knows more than what I do. If he had been in the Chair, I would have been very happy. He would have been able to tell you more than what I can. These big landlords had ejected a million peasants with the help of the Government. With the help of this 'Garibi Hatao' Government, they had evicted one million people and made them homeless and landless and if to-day they are not rehabilitated and they are landless even to-day, who is to blame? Mr. Darbara Singh, I have regard for you outside the House, but, here I must be cruel to you and tell you what you are. We know your character

We have pointed out your capitalist oriented policies and formulations. He has accused my party leader. I emphatically deny that he had any relation. We had no relation whatsoever with the Congress or with the Akalis.

SHRI DARBARA SINGH: You had; it is a fact.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: You are certainly more educsted than I am in matters of politics. Kindly read our public resolution; if you want $I$ will send you copies of them. You are not so ignorant. Now it is Congress rule. The proof of the pudding is in the eating. Let us see what you do with the land reforms. Let us see how soon you are able to bring an Ordinance to put back those one million people ejected out of lands back into lands. Let us see how soon you are going to draw up a reform and implement land distribution. We have supported you on issues which are wort's supporting. We have supported you yesterday. We have supported you on Bank Nationalisation. Our support will be there for you for land reforms in Punjab We shall see what you do.

Now, about corruption. It is a good thing that enquiries are coming. But, let it come in respect of all States in the country. Let us have the skeletons out of the cupboards. We read every day in the newspapers, so many lockers have been raided, the bank of so and so has been raided, the house of so and so has been raided and so on and so forth. I say to poor Mr. Pant, my dear Sir, don't make it confined to Punjab alone, let there be a thorough probe into the conduct of Mitisters in power in all the Stares.

Akalis got licences but ultimately where did these licences go ? It was sold to a great patron-saint of the congress party, the House of Thapars for a big sum Rs. 25 lakhs ; Rs. 25 lakhs was sollected for the licence granted which ultimately went to them, to this patron-saint of yours. Make sure, you should not be so loud about it. It would make us laugh.

Then, Sir, about the brewery. They have started a brewery where they have appointed a technical consultant at a fantastic salary and remuneration; that man is related to a person very high up-I don't want to mention nanes, I hope you won't like it, Mr. Deputy Speaker. Will you?

MR. DEPUTY SPEAKER : No.
SHRI JYOTIRMOY BOSU: So, Sir, I don't want to mention names; I only want to say that that man is very high up second in the Indian ladder. In relation to this what has happened? The cost of making the brewery has passed all reasonable limits. Because, unless he is given that high remuneration and salary, the brewery won't come into existance, according to the super lords sitting in North Block, South Block and Udyog Bhawan.

I want to say this. They have unleashed a police repression to enforce the interest of the big landlords and capitalists. In the name of Naxalites, my partymen are beaten up ; harassed ; arrested. Why ? Mr. Bahuguna, my hon. friend is shaking his head : he looks worried. He knows, we are a party for the future. The same police Raj is there in West Bengal. You resort to individual annihilation and political murder. You give Rs. 5,000 gratuity to plain-clothes policeman for every killing. In the name of Naxalites, you beat up honest political workers. In the end I say, 'Doctor, heal thyself' to Mr. Darbara Singh and his Congress party.

MR. DEPUTY SPEAKER : We shall conclude and dispose of this business by $3.30 \mathrm{p} . \mathrm{m}$. At 3.30 p . m., we have to take up private Members' business. Now, the hon. Minister.

भी मान ससह भोरा (भटिउा) : में ही बाकी बषा हूँ । मुभे पांच मिनट दे दे ।

MR. DEPUTY-SPEAKER : One Member from the hon. Member's party from Punjab has already spoken. I can allow other members only at the expense of nonofficial businees. At $3.30 \mathrm{p} . \mathrm{m}$. we have to take up private Members' business. Now. the hon. Minister.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRI K. C. PANT) : I am thankful to most of the Members who have participated in this debate . . .

SHRI JYOTIRMOY BOSU : Who are the exclusions?

SHRI K. C. PANT : . . . for having supported the measares before the House, namely the Proclamation as well as the Bill.

The ground that has been covered has been somewhat wider, and I hope you will excause me if within the short time that you have given me lam not able to deal with all those points, and I hope hon.Members uho have made those points will also realise my difficulty in this matter.

My hon. friend Shri J. M. Gwoder of the DMK made a charge against Government and said that the Centre imposed President's rule in Punjab and in severa! other States, and he also said that we did not want to see the Opposition governments in those States. He spoke of conslitutional guarantees which must be preserved in a parliamentary democratic system. I am not quite clear if 1 have understood him correstly. But each individual case in which President's rule is promulgated in any State comes before this House, and we have a discussicn and we go into all these aspects. . .

SHRI JYOTIRMOY BOSU: With his brute majority he gets it through.

SHRI K. C. PANT : The Governor's report is before the Heuse in each case and the debates are no record in the past, we have gone into each of these cases thoroughly, and after that, both Houses approve of the Presiden's Proclamation.

But in each case. there are fentures pecullar to that case. It is very difficult to generalise in this manner. But one thing is clear that so long as the oovernment of the

State could be carried on in accordance with the Constitution in any State, the Centre has absolutely no desire to step in. The point that he has missed is this. He talked of constitutional guarantees, but there are also constitutional responsibilities and the responsibility that the Constitution has placed on the Centre is to see that Governments in all the States are, carried on in accordance with the Constitution. When there is a breakdown in this, then alone does article 356 come into play and the President takes over. If this position is clearly understood, I really do not know how my hon. friend can make a generalisation of that kind.

So far as the specific instance goes, in the case of Punjab, we have already discussed this earlier in various forms. I do not want to go over all that ground again. But it is obvious that the Governor in this case only acted on the advice of the Chief Minister. I do not want to go into all those questions about his fast losing his majority etc. etc. I do not want to go into that, but the basic principle in this case was that he did accept the advice of the Chief Minister. My hon.friend from the DMK forgot that the charge which was made here in this House earlier was that the Centre was trying to get its own party into power and therefore was using the Governor for that purpose. But when President's rule was imposed on Punjab, the Congress Party was denied the change to form the government. How dose this tally with his version? I just do not understand $i t$. How could this be looked at from a party point of vicw? If anything, the Congress Pariy could not from the government because of the Governor's action. That has been said already by my party colleagues.

There is ahsolutely no consistency between the charges that are made on both sides. One says that we are trying to impose our government ; the other says that we are trying to manouver a situation where opposition governments are thrown out; the third says that we have got President's rule imposed. It is a simple fact that when a government cannot be carried on in accordance with the Constitution, the Governor advises the President and the President accents that advice in order to uphold the Constitution.

My hon. friend, Shri Swatantra referred to the need for carly elections. We are all
keen to have it as early as possible. But the voter's lists have to be revised and it is only after that whole process has been gone through that elections can be held.

Shri Basu spoke right at the end. He said something which is of significance, though he did not say it in that sanse. He said there were only blue turdans and white turbans to be scen in Punjab. It is a fact.

## SHRI JYOTIRMOY

 landlords and capitalists.SHRIK. C. PANT : In terms of political strength, in the Punjab it is either the Congress Party or the Akali Party who hold the field. Fortunately or unfortunately, as one looks at it, there is no red turban there. Now for the other parties, it is perhaps easier to go for a white or blue turban. His party supported the Akali Dal and they must have put the blue turban on. . .

SHRI JYOTIRMOY BOSU : We support on issues. As my party's name has been mentioned, I want to make this clear. We supported even a monopolist party like the hon. Minister's party on bank nationalisation. But what have they done? They have given more credit to burra suhibs and big agriculturists. In spite of that, we supported them on the nationalisation of general insurance. Again let him remember what happened ycsterday, whether we supported his party or not. Let him not conveniently forget things. We support on issues and we shall continue to do so.

SHRI K. C. PANT : This is an inconvenient fact. The whole House knows it. I just have to s ate it. I do not want to press it home.

He referred to the leader of the Congress Pariy in Punjab by name and said he owned so much of land. It is not a good practice to name anybody. I alleast refrain from it. But since be has done it, I would like to ask him whether the laader of the Communist Party (Marxist) in Bengal is a paluper

SHRI JYOTIRMOY BOSU: 3,000
acres.
SHRIK, C. PANT: Shri Jyoti Bosu is by no menos a paupar.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: He $p$ ossesses nothing which will ever attract the ceiling law. I am talking of big landlords. (Interruptions). He has 3,000 acres.

SHRI DARBARA SINGH : Not. at all, not that much.

SHRI JYOTIR MOY BOSU : Let him not stop so low.

SHRI RAJ BAHADUR : Only Jyoti Bosu and Jyotirmoy Bosu are the richest people.

SHRI K. C. PANT : My hon. friend referred to the people of Punjab as backward. I am one of those $u$ ho always admire the people of Punjab.

SHRI S. M. BANERJEE : I was born in Punjab. They are not backward.

SHRI K. C. PANT: There are always exceptions. The people of Punjab have played a crucial role in the history of this country. They have been the shield of India against foreign invasion. Much of the history of India and the history of its culture has been written on the suil of Punjab. Even today the people of Punjab have in an abundant measure that exuberant vitality, that love of life, which helps them to face up to any situation that may come their way and give strength to the whole country.

Sir, the brave Hindu and Sikh soldiers of Punjab have made a name throughout the world. The farmers of Punjab have set an example to the whole country in what can 'e done under hard conditions in the field of agriculture Small industria:ists and the craftsmen of Punjab are an example for their kind anywhere in the world. Even though I agree when some hon. friends said that there is not too mnch of a big industry in Punjab, there is some There is not too much. But the per capita income of Punjab is the highest in the country for the imple that the crafismen of Punjib are so good and you have so much of homehold industry, in Punjab. The henefits of indusity are so wide spread that they are able to assist not only the development of Puniab but the whole country So, I think that my hon. friend, Shri Jyotimoy Rosu, spoke very loosely whon he spoke of such people as boing backward,

SHRI JYOTIRMOY BOSU : I never said anybody was backward.

SHRI K. C. PANT : Now he is gradually seeing the error of his words. So, I do not want to go into it further.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : I would ask you to refer to the record.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Order, please. It is on record.

SHRI JYOTIRMOY BOSU : You are the only backward people Indians. Your per capita income is one of the lowest in the world. Your economic development is the poorest in the world.

SHRI K. C. PAN T His guilty conscience is breaking through now.

SHRI B. N. REDDY (Miryalguda) : rose-(Interruption)

SHRI K. C. PANT: I thought he was capable of taking care of himself, Don't you believe that ?

Now, many hon. friends have referred to the charges of corruption, and the fact 'hat certain memoranda have been given to the Governor of Punjab. I do not want to go into the details. Preliminary enquiries are being made, and in these enquiries reveal prima facie ground for turther action, appropriate action will certainly be initiated.

So far as the demand of the Punjab employees goes, I only want to refer to the transfet of teachers first. I want to refer to that because I think some hon friends referred to that specifically. Earlier, mass transfers had been ordered. Now, these transfer; have been cancelled and the status (fut) cinte has been restored.

On the other things also, I am sure that the Punjab Government will look into all the demands of the employecs with sympathy. On the problems of the Harijans which was referced, without again going into any details, 1 would like to say that this Government now under President's rule will be very particularly anxious that Harijans are treated well. that there is no uppression and they get iustice to which they are ontitled.

Xavily, there was reference to land reforms by varicus Mcmbera. On this
question, I would like to say that the Central Land Reforms Committee to which reference was made did take nnte of this fact-because I was a Member there and I was sitting there-namely, the difference between PEPSU and Punjab landlaws. We feel that there is need to review the existing laws relating to land and particularly those in regard to the ceiling on land-holdings.

We have asked the State Governments to have such a review in close consultation with the Central Ministry of Agriculture.

Many of our friends have already dealt with the affairs of the Delhi Gurdwaras. I would not like to say anything beyond this, that the Delhi Gurdwaras could not hold elections for many years, years on end, and nobody raised a voice. Today those very peopie who countenanced the lack of elections for years on end are clamouring for early elections. This fact has to be borne in mind, although we on our part do want to hold early elections there.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is :
"That this House approves the Proclamation issued by President on the 15th June, 1971, under article 356 of the Constitution in relation to the State of Punjab."

The motion was adopted.
MR, DEPUTY-SPEAKER: The question is :
"That the Bill to confer on the Presitent the power of the Legislature of the State of Punjab to make laws, as passed by Rajya Sabha, be taten into consideration."

The motion was cidopted.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The ques. tion is :
"That Clauses 2, 3, Clause 1, the Enacting Formula and the Title stand part of the Bill."

The motion was adouled.
Clauses 2, 3, Clause !. The Enacting Formula and the Tisle were added th the Bill

SHRIK. C. PANT : 1 beg to move "That the Bill be pussed."

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is:
"That the Bill be passed,"
The motion was adopted.
15.32 hrs .

## THE SALARIES AND ALLOWANCES OF MINISTERS BILL*

SHRI H. M. PATEL (Dhandhuka) : I beg to move for leave to introduce a Bill to consolidate and amend the law relating to the salaries and allowance of Ministers.

MR. DEPUTY-SPEAKER : Motion moved
"That leave be granted to introduce a Bill to consolidate and amend the law relating to the salaries and allowances of Ministers."

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur) : I rise to oppose this Bill. I have to remind the House and my hon. friend Shri H. M. Patel and Piloo Mody who has also sponsored this Bill, of the Bill moved by my hon. friend Shri Dandekar. The idea of it was just to curtail certain rights and privileges in terms of money of the hon. Ministers. But here, if you read the Bill, it does not do that. We want the Ministers in this country to reduce their expenses, and not to pass another legislation to give them the same benefits that they are enjoying now. I appieciate the idea and the intention of the sponsers of this Bill, but this Bill does not meet the requirements. Now the Ministers are getting something income-tax free. Let there be a simple Bill by which whatever they are getting is charged income-tax.

If you read the Statement of Objects and Reasuns, it says;
"The main object of this Bill is to make clear to the Public the true cxtent of the over-all emoluments now being received by the Council of Ministers of the Central Government, and to indicate to the tax payers in particular the true cost thereof."
Lastly it says :
"It is not intended to make, nor does
the Bill in fact make, any substential change, whether by way of increase or decrease, in the money value of the present aggregate real emoluments of the Ministers."
If it is decreased, I will welcome it, but what is the use of sponsoring a Bill which does not decrease their salary?

Today two lakhs of Central Goverdment employees have been denied increase in dearness allowance even after the cost of living index has gone upto 225. Why should we think that the Ministers should continue to get what they are getting ? I would request him to bring another Bill suggesting dccrease in their salaries which I will support.

Members of Parliament do not suggest decrease in the Minister's salaries because they are afraid of decrease in their own salaries. I would request Nr. Patel. therefore, to withdraw this Bill and bring another Bill which I will readily support.

SHRI H. M. PATEL: It seems to me that the hon. Member has not fully appreciated the importance of a Bill of this kind. It really focusses allention on the existing actual emoluments of the Ministers. Just as an ordinary member of the public has to pay income-tax, it is important that the average citizen realises what emoluments he pays to the Ministers. There is no particular reason, at this stage, as we see it, to cut down their emoluments. What is objectionable is in the first instance that the ordinary person gets an idea that the Minister receives a salary in terms of a couple of thousand rupees...

MR. DEPUTY-SPEAKER: You are going into the merits.

SHRI H. M. PATEL : Ho went into the merits and said that he couid understand a Bill which sought to reduce the emoluments. I will have no objection if he moves an amendment suggesting reduction of their emoluments.

MR. DEPUTY-SPEAKER : The question is:

[^4][^5]
[^0]:    **T he Speaker not having subsequently document was not treated as laid on the

    + The original speech was delivered in

[^1]:    *Not recorded.

[^2]:    *The Original speech was delivered in Telugh.

[^3]:    Now that there is Central rule in Pun. jab, the Centre has a great responsibility to diseharge. As many of the speakers have pointed out, the uhole atmosphere there is vitialed. The officials are demoralised and the whole administralive machinery needs

[^4]:    - That leave be granted to introduce a Bill to consolidate and amend the law

[^5]:    Published in Ciazette of India Extra-ordinary, Part II, seetion 2, dated 5.8.71,

